ISSN-2321-3981

₹ २०

विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक

देवपुत्र

भाद्रपद २०७६ सितम्बर २०१९

चन्दामामा पास के...

Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

दिल्ली शाखा

सामान्य अध्ययन

ओरिएन्टेशन क्लास के साथ बैच का प्रारंभ

17 सितंबर

शाम 6:30 बजे

अगर आप इस बैच में एडमिशन लेना चाहते हैं
तो पहले ही स्थान आरक्षित कराएँ।

हिंदी साहित्य
(वैकल्पिक विषय / वीडियो क्लासेज़)

द्वारा - डॉ. विकास दिव्यकीर्ति

इतिहास
वैकल्पिक विषय

द्वारा- श्री अखिल मूर्ति

प्रयागराज शाखा

सामान्य अध्ययन

ओरिएन्टेशन क्लास के साथ बैच का प्रारंभ

27 अगस्त

प्रातः 8:00 बजे

इस सत्र में एडमिशन लेने वाले विद्यार्थियों के लिये फीस में 10% की छूट
(कुछ ही स्थान शेष हैं, कृपया देर न करें)

हिंदी साहित्य
(वैकल्पिक विषय / वीडियो क्लासेज़)

द्वारा - डॉ. विकास दिव्यकीर्ति

भूगोल
(वैकल्पिक विषय)
द्वारा - श्री वी.के. त्रिवेदी

इतिहास
(वैकल्पिक विषय)
द्वारा - श्री अख्तर मलिक

दृष्टि टेस्ट सीरीज़ कार्यक्रम

IAS

प्रिलिम्स टेस्ट सीरीज़-2020

सामान्य अध्ययन और सीसैट

1 सितंबर से प्रारंभ

30 टेस्ट्स

- 25 GS
- 5 CSAT

हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों माध्यम में

UPPSC

प्रिलिम्स टेस्ट सीरीज़-2019

सामान्य अध्ययन और सीसैट

8 सितंबर से प्रारंभ

10 टेस्ट्स

- 8 GS
- 2 CSAT

ऑनलाइन और ऑफलाइन

दिल्ली शाखा का पता : दृष्टि टेस्ट सीरीज़ सेंटर, 707, मुखर्जी नगर, दिल्ली

प्रयागराज शाखा का पता : 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज

Ph.: 8448485517, 8448485519, 87501 87501, 011-47532596

विश्व का सर्वाधिक प्रसार संख्या कीर्तिमान

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

भाद्रपद २०७६ ▪ वर्ष ४०
सितम्बर २०१९ ▪ अंक ३

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९, ४३९
e-mail: devputraindore@gmail.com
editordevputra@gamail.com

सीधे 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' के खाते में राशि जमा करने हेतु –
खाता संख्या –53003592502
IFSC-SBIN0030359
आलोक : कृपया केवल 5000 रु. से अधिक की राशि जमा करने हेतु ही कोर बैंकिंग सुविधा का उपयोग करें।

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो,

बचपन की लोरियों से लेकर आज तक चन्दामामा आपके हृदय और हमारे परिवार का एक सदस्य ही रहा है। बालमन को ये प्यारे मामाजी कोई अभी-अभी भाने लगे ऐसा नहीं। सूरदास जी की लिखी कान्हा की बाल लीलाएँ पढ़ना। उनमें एक प्रसंग आता है कि कान्हा जब चन्दामामा को लेने की जिद्द कर बैठते हैं तो मैया उनका मन समझाने के लिए एक थाली में पानी भरकर उसमें चंदामामा की परछाई दिखा देती हैं। यह भ्रम तब से लेकर अब तक चला आ रहा है। बालमन आज भी चंदामामा को सब कुछ अपनी तरह करते हुए अनुभव करता है। तभी तो कह उठता है-

''चंदा मामा दूर के
पूए पकाए चूर के
आप खाए थाली में,
मुन्ने को दे प्याली में।''

मुन्ना भले ही २१वीं सदी में पहुँच जाए उसके भोले हृदय में यह विश्वास कभी खण्डित नहीं होता कि चन्दामामा उसे प्याली में पुए खिलाएंगे।

फिर आया विज्ञान का युग। बड़ी-बड़ी दूरबीनों के आविष्कार हुए। यान बने और वे मनुष्य को लेकर जा पहुँचे सीधे चन्दामामा की गोद में। यह वह युग था जब हमारे दादाजी आप जैसे बच्चे थे। वैज्ञानिकों ने जब कहा- चन्दमा केवल ऊबड़-खाबड़ चट्टानों का एक समुच्चय है। इस पर हवा, पानी भी नहीं है तो उस युग के मुन्ना का मन बैठ गया था।

आज इक्कीसवीं सदी का मुन्ना उतना भावुक नहीं रहा। गुगल से पूछकर वह 'जी.के.' 'अपडेट' करता है। यही कारण है कि जब अपने ही देश ने चन्द्रयान बनाकर चन्दामामा के पास भेजा तो मुन्ना को वह इतना ही आसान लगा जितना 'रफ कॉपी' से पृष्ठ फाड़कर रॉकेट बनाकर उड़ाना।

चन्द्रयान का चन्दामामा तक पहुँचना पूरे देश के लिए गौरव का विषय है। यह हमारी बड़ी उपलब्धि तो है ही पर नए युग के बच्चों ने उसे जिज्ञासा के साथ अध्ययन किया, इंटरनेट पर सर्च किया, टी.वी. पर लाईव देखा, चर्चाएँ और बहस सुनीं। पता नहीं इन सब बच्चों को वह आनंद मिला होगा कि नहीं जो कान्हा को थाली के पानी में अपने चन्दामामा को देखकर मिला होगा?

हाँ इतना अवश्य हुआ कल के मुन्ना का झूम-झूमकर गाया जाने वाला गीत- ''चंदामामा दूर के'' बदल गया है। आज का मुन्ना मोबाईल, लेपटॉप और टी.वी. से घिरा कानों में इयरफोन लगाए धीर गंभीर मुद्रा में धीरे-धीरे बुदबुदा रहा है- ''चन्दामामा पास के''।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

अनुक्रमणिका

कहानी

- और वे मित्र बन गए - डॉ. नीलम राकेश ०५
- डर के आगे जीत है - रेखा लोढा 'स्मित' १२
- शिल्पी बालक धर्मपद - गंगाराम शर्मा २२
- भूतहा शौचालय - संतोष शर्मा २८
- गोलू और पानी... - डॉ. विनीता रहुरिकर ३९

लघुकथा

- दूध का ऋण - गोविन्द भारद्वाज २१

कविता

- मूषक और गणेश - शिवचरण चौहान ०८
- शिक्षक दिवस - विनोदचंद्र पाण्डेय ०९
- हिन्दी - रामगोपाल राही १९
- तारों की दुनिया - श्रवण कुमार सेठ ३८
- भारतीय महीने - तपेश भौमिक ४७

प्रसंग

- विद्यार्थियों की सेवा - मोहन उपाध्याय १०
- पं.दीनदयाल उपाध्याय - श्यामसुन्दर सुमन ११

विशेष

- अमृतसर के निर्माता - ४४
- धारा ३७० का अंत - ४८

चित्रकथा

- झगड़े का अंत - देवांशु वत्स १५
- बराबर वालों के साथ - देवांशु वत्स ३५
- खुशी - संकेत गोस्वामी ४६

बाल प्रस्तुति

- धत् तेरे की - देवेन्द्र सुथार २०
- समझदार झल्लू - कंचन जोशी ३६

स्तंभ

- संस्कृति प्रश्नमाला - १४
- गाथा वीर शिवाजी की - १६
- विषय एक कल्पना अनेक - हरप्रसाद रोशन २४
- - राजकुमार जैन 'राजन'
  - आकांक्षा यादव
  सचित्र विज्ञान वार्ता - संकेत गोस्वामी २६
- देश विशेष - श्रीधर बर्वे ३४
- स्वयं बने वैज्ञानिक - राजीव तांबे/सुरेश कुलकर्णी ४१
- हमारे राज्य वृक्ष -डॉ. परशुराम शुक्ल ४२
- छः अगुल मुस्कान - ४३
- आओ पता करें - ४३
- आपकी पाती - ४३
- पुस्तक परिचय - ४५
- बड़े लोगों के हास्य प्रसंग - ४७

रचनाकारों से निवेदन

सभी बाल रचनाकारों एवं साहित्यकारों से निवेदन है कि यदि आप देवपुत्र में प्रकाशन हेतु अपनी रचना अणुडाक (E-mail) से भेजना चाहते हैं तो कृपया अपनी रचना- editordevputra@gmail.com पर भेजिए।
अब से devputraindore@gmail.com का उपयोग केवल सदस्यता एवं व्यवस्था कार्यों के लिए किया जाना अपेक्षित है।

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं?

तो कृपया ध्यान दें!
देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक - **53003592502** IFSC-SBIN**0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के मेल ID devputraindore@gmail.com पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

और वे मित्र बन गए

कहानी : डॉ. नीलम राकेश

दुबला पतला साँवला सा नलिन चुपचाप आकर पीछे की बेंच पर बैठ गया।

''खम्बा...खम्बा...खम्बा...'' शोभित के ये शब्द उसके कानों में गूँज रहे थे।

इस विद्यालय में वह अभी नया था। लम्बी कद–काठी के कारण नलिन अलग से दिखाई देता। शोभित और उसके साथी इसी कारण उसे परेशान करते रहते। नलिन फिर भी उससे कुछ नहीं कहता चुपचाप रोज आकर कक्षा की अंतिम बेंच पर बैठ जाता और अपने नोट्स बनाता रहता।

इस विद्यालय में आने से पहले नलिन अपने कस्बे के विद्यालय में पढ़ता था। नलिन के पिता ड्राइवर थे और शहर में ही रहते थे। अपने मेधावी बेटे की प्रतिभा देखकर, उसके अध्यापकों के कहने पर वे उसे पढ़ने के लिए शहर, अपने पास ले आए।

प्रथम बार इतने बड़े विद्यालय में जाते हुए उसे संकोच हुआ। साथियों की प्रदर्शन की आदत ने और भी संकुचित कर दिया था। कोई लड़का अपना नया बैग दिखाता तो कोई अपनी मोपेड का गुणगान कर रहा होता।नलिन इस सबसे स्वयं को अलग पाता। अतः वह अपनी पढ़ाई में लगा रहता।

वह शनिवार का दिन था। विद्यालय में बड़ा उत्साह था सभी छात्र विद्यालय के मैदान में चारों ओर एकत्र थे। आज उनके विद्यालय में पारम्परिक प्रतिद्वन्दी विद्यालय ''सेन्ट होली बेसेन्ट'' के साथ उनका ''बास्केटबाल'' का फाइनल मैच था। सभी मैच आरम्भ होने की प्रतीक्षा कर रहे थे। ''सेन्ट होली बेसेन्ट'' विद्यालय के भी बहुत सारे छात्र आये हुए थे। थोड़ी देर बाद दोनों विद्यालयों के

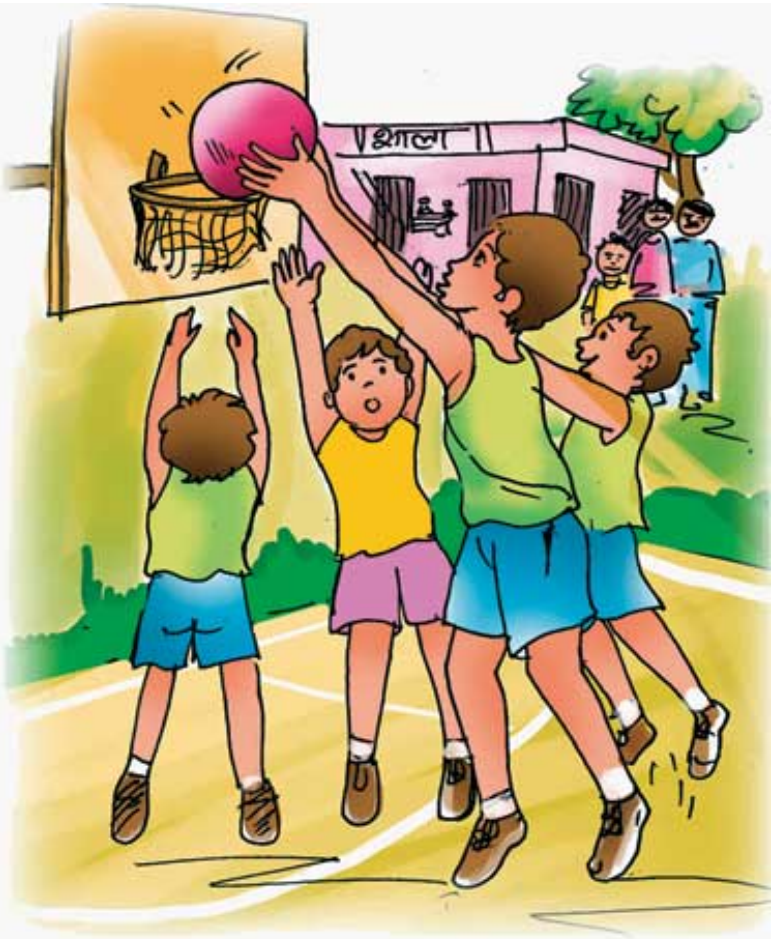

शिक्षक और प्राचार्य आकर बैठ गए। निर्णायक (रेफरी) के संकेत करते ही खेल (मैच) आरम्भ हो गया। दोनों विद्यालय के छात्र अपने–अपने दल को प्रोत्साहित कर रहे थे। खूब हो हल्ला हो रहा था। तभी नलिन के विद्यालय ''होली चाइल्डस'' का खिलाड़ी गिर कर घायल हो गया। दल के दोनों प्रतिस्थानी खिलाड़ियों में से एक अनादि, उसके स्थान पर जाकर खेलने लगा।

''होली चाइल्डस'' के खेल के अध्यापक चारों ओर अपने प्रतिस्थानी खिलाड़ी को देखने लगे और यह जानकर चिन्तित हो गए कि वह छात्र अनुपस्थित था। अभी वे कुछ सोच भी नहीं पाये थे कि उनके दल का कप्तान गिर पड़ा। उसके पैर में चोट आई थी।

''अब क्या करूँ?'' खेल शिक्षक बोले।

''मैं चला जाऊँ?'' रोहित ने पूछा।

''नहीं! तुम कैसे खिलाड़ी हो मैं जानता हूँ।''

इधर देर होने से छात्र हल्ला मचा रहे थे। परेशान से प्राचार्य जी ने जोर से आवाज देकर पूछा,

''आप दूसरा खिलाड़ी क्यों नहीं भेज रहे हैं?''

''भ...भेज रहा हूँ श्रीमान!'' खेल शिक्षक श्री गुप्ता बोले।

''गुप्ता जी आप रोहित को ही भेज दीजिए। खेल तो पूरा हो।'' सिन्हा जी ने सलाह दी।

''आप अपनी टीम तो समझो हार गई।'' निराशा के साथ गुप्ता जी बोले।

''नहीं श्रीमान् । अपना दल जरूर जीतेगा। आप मुझे खेलने का मौका दीजिए।'' पूरे आत्म विश्वास के साथ एक नया लड़का बोल रहा था।

''....तुम? लेकिन....'' गुप्ता जी हिचकिचाये।

''मेरा नाम नलिन हैं। मैं इस विद्यालय में अभी नया आया हूँ। अपने पुराने विद्यालय में मैं विद्यालय बास्केटबाल दल का कप्तान था और खेल का चैम्पियन भी।'' नलिन ने स्पष्ट किया।

''ठीक है नलिन, अब विद्यालय का मान तुम्हारे हाथ में है। हमारे दोनों श्रेष्ठ खिलाड़ी घायल होकर वापस आ गए हैं और इनके बिना हमारा दल भी नहीं है।''

''आप निश्चिंत रहिये श्रीमान!''

''बेस्ट आफ लक, सौभाग्यशाली बनो नलिन।'' गुप्ता जी ने नलिन की ओर अपना अँगूठा उठा दिया।

दौड़ता हुआ नलिन मैदान में पहुँच गया। चकित से खिलाड़ी साथी उसे देख रहे थे।

''एकदम नए लड़के को फाइनल मैच में कैसे भेज दिया?'' परेशान सा उप कप्तान निखिल बुदबुदाया।

''अरे, अब तो हारना तय ही है। महेश आज नहीं आया है। नया लड़का आये या रोहित एक ही बात है।'' मोहित धीरे से बोला।

नलिन सीधा उप कप्तान के पास पहुँचा। दोनों के बीच कुछ देर बात हुई और मैच पुनः आरम्भ हो गया। दर्शकों ने तालियाँ बजाई। खेल आरम्भ होने के दो मिनट बाद बाल नलिन के हाथ में पहुँच गई। सभी चकित से देख रहे थे। लग रहा था जैसे नलिन के हाथ में कोई चुम्बक हो। नलिन की प्रतिभा को पहचानते ही प्रतिद्वन्द्वी टीम के तीन खिलाड़ियों ने उसे घेर लिया। बहुत चतुराई से निखिल को बाल पास कर के नलिन आगे बढ़ गया। नलिन और निखिल के बीच सुन्दर ताल मेल दिखाई देने लगा। निराशा में डूबती हुई टीम में जैसे प्राण आ गए। पूरा दल उत्साहित हो गया था। उसी समय नलिन ने बास्केट के पास पहुँच कर अपनी लम्बाई का लाभ उठाते हुए बाल को बास्केट में डाल दिया।

आकाश तालियों से गूँज उठा था। जोश से भरी ''होली चाइल्डस'' का दल पूरे दम-खम से खेलने लगी। खिलाड़ियों के आत्मविश्वास के लौटते ही जैसे दल में नई जान आ गई। सभी खिलाड़ी एक दूसरे के साथ सही ताल मेल बनाकर खेलने लगे। परिणाम स्वरूप होली चाइल्डस का दल आठ-चार के स्कोर से जीत गई।

तालियों की गड़गड़ाहट से आकाश गूँज उठा था। सभी खिलाड़ियों ने नलिन को कंधे पर उठा लिया। प्रसन्नता के इस माहौल में नलिन का संकोच भी उड़न छू हो गया था। सहमा-सहमा सा वह लड़का आज पूरे विद्यालय का नायक (हीरो) बन गया था। इस वैजयंती (ट्राफी) को जीतने का पूरा साफा नलिन के सिर बँधा था। पुरस्कार लेकन नलिन जब अपनी सायकिल से घर जाने लगा तब कई अन्य छात्र भी उसके आगे पीछे चलने लगे। सभी उससे मित्रता करना चाहते थे।

अगले दिन जब नलिन विद्यालय पहुँचा तो अनेक अनजान मुखड़े उसे देखते ही मुस्कुरा देते या ''नमस्ते नलिन!'' बोलते। अब वह विद्यालय का एक जाना पहचाना नाम था। बच्चा-बच्चा उसे जानता था। अध्यापकों की दृष्टि में भी उसकी अलग एक पहचान बन गई थी। परन्तु नलिन बिल्कुल नहीं बदला। घमण्ड को उसने अपने पास फटकने नहीं दिया। यह उसी तरह अपनी पीछे की सीट पर जाकर बैठता और वैसे ही शान्ति में पढ़ता।

अर्द्धवार्षिक परीक्षाएँ आरम्भ हो गई। सभी छात्र खेलकूद को भूल कर पढ़ाई में लग गए। जब परिणाम घोषित हुआ तो सभी चकित रह गए। खेल का हीरो पढ़ाई

का भी चैम्पियन निकला। नलिन अपनी कक्षा में प्रथम आया था। सभी उसे बधाई दे रहे थे। शोभित उसके पास आकर बोला।

''नलिन तुमने एक कीर्तिमान स्थापित किया है मित्र!''

''तुम्हें भी बधाई शोभित, तुम भी तो द्वितीय आये हो।'' नलिन ने हाथ आगे बढ़ाया।

''धन्यवाद! लेकिन मैं कक्षा में प्रथम आने की बात नहीं कर रहा हूँ।'' हाथ मिलाता हुआ शोभित बोला।

''मतलब?'' आश्चर्य से नलिन ने पूछा।

''नलिन, तुमने मेरी धारणा को गलत सिद्ध कर दिया।''

''.....'' नलिन अपलक शोभित को देख रहा था। उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

''मुझे गलत मत समझो नलिन! मैं तुम्हारा कृतज्ञ हूँ। मैं पढ़ने में अच्छा था तो खेल को कमतर मानता था। मेरी इस धारणा को तुमने बदल दिया तुमने खेल, पढ़ाई और लोकप्रियता सभी में अपना कीर्तिमान स्थापित किया है।''

''खेल भी हमारे तन और मन के स्वास्थ्य के लिए बहुत आवश्यक हैं। बस हमें पढ़ाई और खेल के बीच सही संतुलन बनाना होता है।'' नलिन बोला।

''सही कह रहे हो। हम सब अब तुम्हारे जैसा बनने का प्रयास करेंगे।'' कहते हुए शोभित ने हाथ बढ़ाया।

''मुझे भी एक अच्छे मित्र की तलाश थी शोभित, जो आज पूरी हो गई।'' कहते हुए नलिन ने शोभित को गले लगा लिया।

● लखनऊ (उ.प्र.)

उलझ गए!

● देवांशु वत्स

एक फोटो में एक स्त्री की ओर इंगित करते हुए मोहन ने राजू से कहा- ''वह मेरे दादाजी के एकमात्र पुत्र की पुत्री है।'' मोहन का उस स्त्री से क्या रिश्ता है?

(उत्तर इसी अंक में)

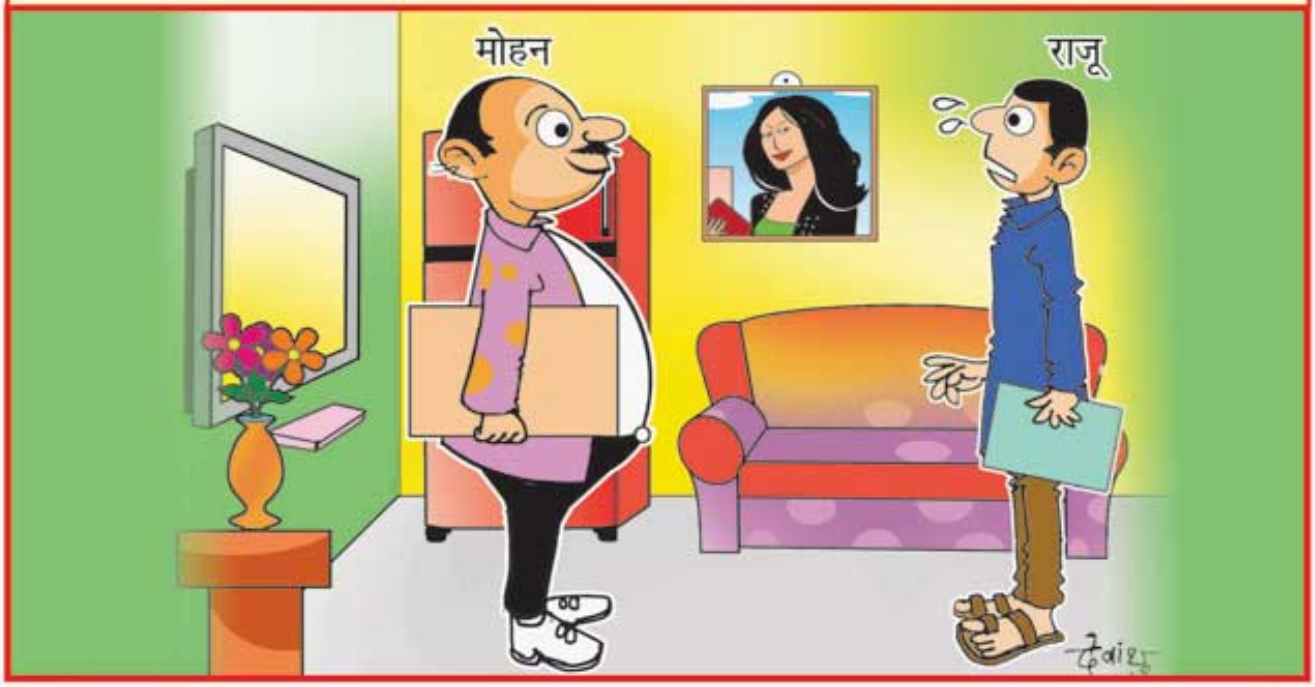

।। श्री गणेश की बाल लीला ।।

मूषक और गणेश

कविता : शिवचरण चौहान

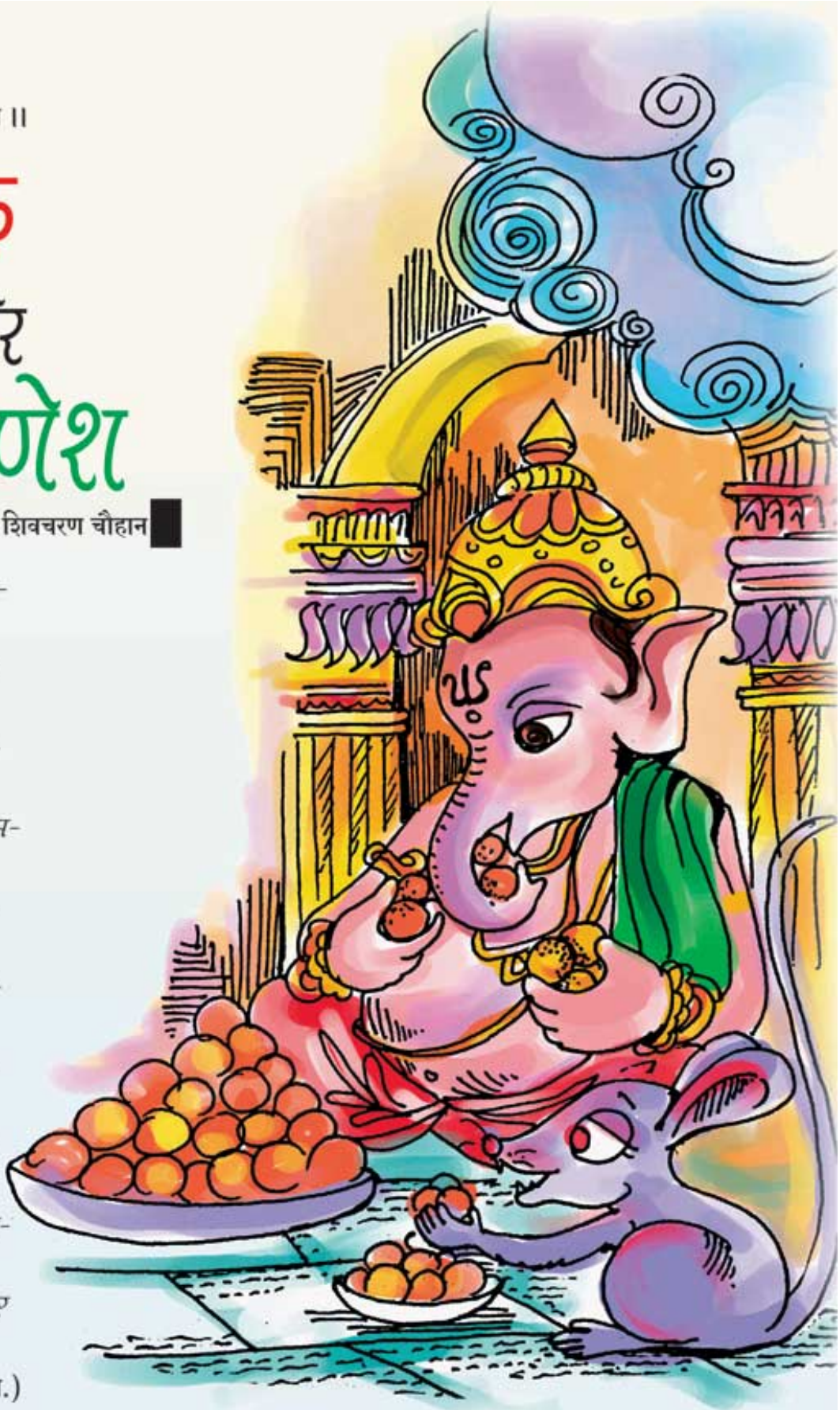

बात-बात में होड़ लगाए-
मूषक और गणेश।
होड़ बड़ी बेजोड़ लगाए-
मूषक और गणेश।।
बड़े-बड़े सौ लड्डू सबसे-
पहले जो खाएगा।
वही विजेता होगा, हरदम-
पहले वह खाएगा।
सौ-सौ लड्डू गए मंगाए-
मूषक और गणेश।।
खाने को तब आगे आए-
मूषक और गणेश।।
दोनों हाथों से गणेश ने-
सारे लड्डू खाए।
पर मूषक जी, सौ में से-
दो लड्डू कम खा पाए।
धमा चौकड़ी खूब मचाए-
मूषक और गणेश।।
फिर खाने की होड़ लगाए
मूषक और गणेश।।

● कानपुर (उ.प्र.)

।। शिक्षक दिवस : ५ सितम्बर ।।

शिक्षक दिवस

कविता : विनोदचन्द्र पाण्डेय 'विनोद'

आओ, शिक्षक दिवस मनायें।
आज करें गुरुओं का वन्दन।
करें शिक्षकों का अभिनन्दन।।
अध्यापक-गण सम्मानित हों,
हम उनकी गुण गाथा गायें।
आओ शिक्षक दिवस मनायें।।
गुरु ही हमें ज्ञान देते हैं।
सारे दुर्गुण हर लेते हैं।।
देते हमें दान विद्या का,
उनके आगे शीश झुकायें।
आओ, शिक्षक दिवस मनायें।।
शिक्षा जीवन सफल बनाती।
मन में नव प्रेरणा जगाती।।
शिक्षा में भविष्य उज्ज्वल हो,
शिक्षा में हम ध्यान लगायें।
आओ, शिक्षक दिवस मनायें।।
है विशेष गुरुओं की महिमा।
है विशेष गुरुओं की गरिमा।।
हम उनका उपकार न भूले,
उनके प्रति सद्भाव जगायें।
आओ शिक्षक दिवस मनायें।।

● लखनऊ(उ.प्र.)

विद्यार्थियों की सेवा

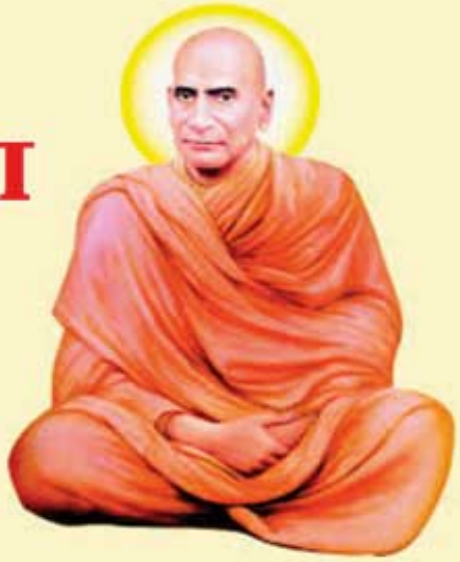

प्रसंग : मोहन उपाध्याय

महात्मा मुंशीराम ने (जो बाद में संन्यासी बनने पर स्वामी श्रद्धानंद कहलाये।) अपने तथा अन्य लोगों के कुछ बालकों को लेकर 'गुरुकुल काँगड़ी' नाम से एक छोटे से विद्यालय की स्थापना की। । यह स्थान हरिद्वार के निकट है। धीरे–धीरे विद्यार्थियों की संख्या बढ़ने लगी और कई विद्यार्थी वहाँ रहकर पढ़ने लगे। (अब गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय बन चुका है।) रात में सोने के समय मुंशीराम जी प्रत्येक कमरे में जाकर देखते थे कि किसी विद्यार्थी को ओढ़ने–बिछाने के लिए कोई कमी तो नहीं है। वे यह भी देखते थे कि किसी विद्यार्थी के स्वास्थ्य में कोई गड़बड़ तो नहीं है।

एक रात जब वे एक कमरे में पहुँचे तो उन्होंने देखा कि एक विद्यार्थी अपने बिछौने पर बैठा हुआ घबरा रहा था और उसे उल्टी होने वाली है। वे उसके पास पहुँचकर प्रेम से बोले– ''बेटा! अभी इतना समय नहीं है कि कोई बरतन लाऊँ जिसमें तुम उल्टी कर सको, इसलिए तुम मेरी अंजलि में ही उल्टी कर दो ताकि मैं उसे बाहर फेंक हाथ धोकर एक बर्तन और लोटे में पानी ले आऊँगा, फिर तुम बरतन में कुल्ले कर देना जिससे यहाँ गंदगी नहीं फैले।'' पहले तो विद्यार्थी हिचकिचाया परंतु मुंशीराम जी के आग्रह तथा प्रेमवश उसने उनकी अंजलि में ही उल्टी कर दी। तब वे बाहर निकले अपने हाथ धोकर एक बरतन तथा लोटे में पानी लेकर आये, विद्यार्थी ने बरतन में कुल्ले किये और वह थोड़ा स्वस्थ दिखने लगा। मुंशीराम जी ने उसे ढाढस बंधाया और हिम्मत दिलाई ताकि वह चैन की नींद सो सके।

विद्यार्थी के सो जाने पर महात्मा जी अपने कमरे की ओर चल दिए।

• अजमेर (राज.)

चित्र बनाओ • राजेश गुजर

बच्चो, चिड़िया का चित्र

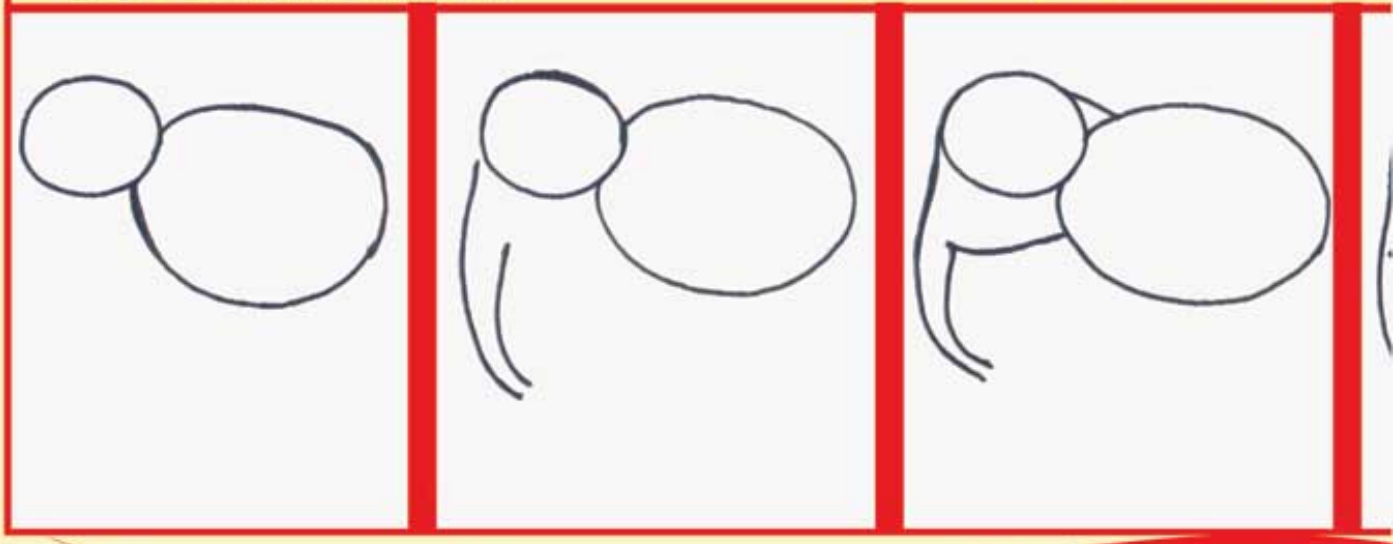

|| २५ सितम्बर : पं. दीनदयाल जयंती ||

पं. दीनदयाल उपाध्याय

प्रसंग : श्यामसुन्दर सुमन

पं. दीनदयाल उपाध्याय इतिहास के अनूठे अध्येता तथा असाधारण प्रतिभा के धनी थे। उन्हें अनेक कालेज व विश्वविद्यालय से आमंत्रण मिला कि वे अपनी इस अनूठी प्रतिभा से छात्रों को लाभान्वित करें। लेकिन उन्होंने संकल्प लिया कि अविवाहित रहकर अपना जीवन राष्ट्रधर्म के लिए लगाऐंगे।

पं. दीनदयाल उपाध्याय ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विचारों से प्रभावित होकर संघ के विचारों के प्रसार के लिए जीवन समर्पित करने का निर्णय लिया। एक बार वे लखीमपुर के संघ कार्यालय में रुके हुए थे, बसन्तराव वैद्य उनके सहयोगी पास में बैठे हुए थे। पंडित जी ने अपने सन्दूक में से एक कागज निकाला और उसे अपनी जाकेट की जेब में रखा और बोले– ''बसंतराव! सन्दूक के सभी कागजों को जला दो।'' बसंतराव ने अपनी निगाह कागजों पर दौड़ाई। वे सबके सब पंडित जी के हाई स्कूल से लेकर एम.ए. तक के प्रमाण पत्र, अनेक प्रशंसा पत्र तथा अभिनन्दन पत्र थे। बसंतराव ने पंडित दीनदयाल से धीरे से कहा ''पंडित जी! बक्से में तो महत्वपूर्ण प्रमाण पत्र हैं। ये सब भविष्य में असाधारण प्रतिभा के साक्षी के रूप में उपयोग में लाए जा सकते हैं।'' पंडित जी ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया– ''बसंतराव! मैंने अपना पूरा जीवन ही राष्ट्र के लिए अर्पित करने का संकल्प ले लिया तो इन प्रमाण पत्रों व उपाधियों का प्रदर्शन कर सम्मान प्राप्त करने की लालसा क्यों पाले रखूं।'' बसंतराव पंडित जी के शब्द सुनकर हतप्रभ थे।

● भीलवाड़ा (राज.)

आसानी से बनाओ और रंग भरो।

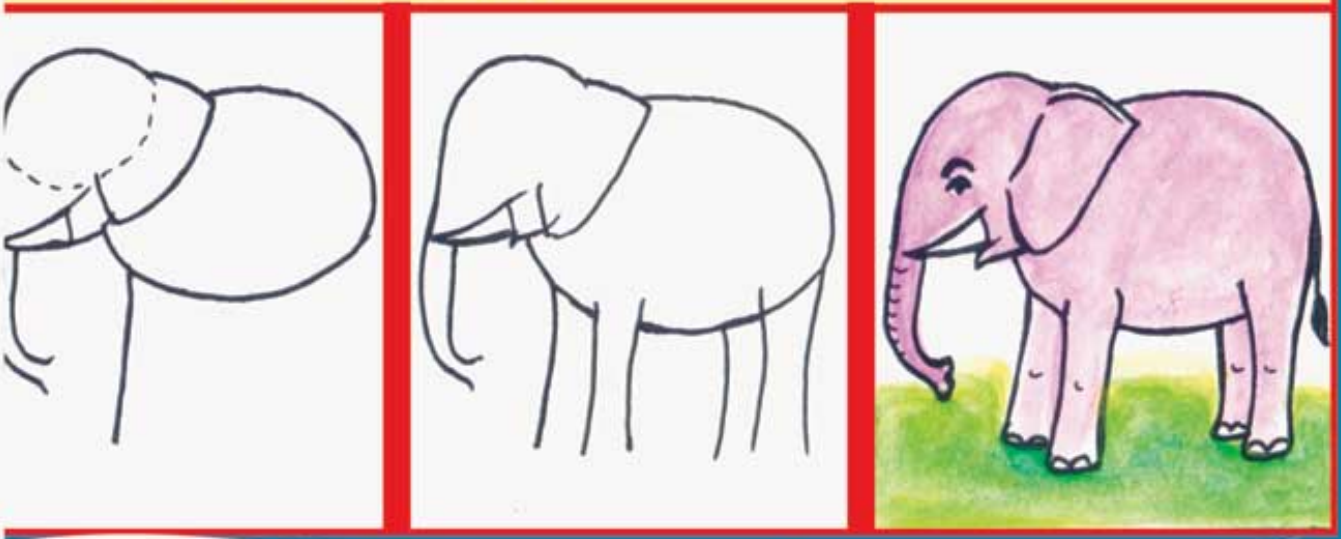

डर के आगे जीत है

कहानी : रेखा लोढ़ा 'स्मित'

समीर के कार्यालय जाने के बाद राखी ने बचे हुए कार्य पूरे किए और पीहू व कुहू से स्नान कर जलपान करने को कहा, पर ठंड के कारण बच्चे नहाने से जी चुराने लगे तब राखी ने कहा –''स्नान बहुत जरूरी है। बच्चो! हमारे बचपन में गीजर, हीटर कुछ नहीं होते थे। कितनी भी ठंड हो बिना नहाए हमें खाना नहीं मिलता था। हम सब भाई–बहन नहा कर जलती हुई अँगीठी के पास बैठते और ठंड छू–मन्तर हो जाती थी।'' बच्चे आश्चर्य से पूछने लगे– ''ये अँगीठी क्या होती है माँ?'' राखी ने कहा– ''आज तो नहालो, आज पिताजी को कहकर अँगीठी मँगवा लेंगे और कल अँगीठी जरूर जलाएँगे।'' दोनों बच्चे अँगीठी को देखने के उत्साह में नहा लिए, पर दिन भर जिद करते रहे ''माँ, पिताजी को फोन कर अँगीठी लाने के लिए कहो ना।'' राखी ने फोन कर समीर से कहा कि ''वे शाम को जब सामान लेने बाजार जाएं तो लोहा बाजार से एक अँगीठी भी लेते आएं। ''हम बच्चों के बचपन की भेंट हमारे बचपन से कराएँगे।'' समीर से बात खत्म कर राखी ने किराने वाले बाबूभाई को फोन किया वे कोयले का एक कट्टा भिजवा दें। थोड़ी देर में बाबूभाई ने कोयले भिजवा दिए, जो राखी ने गली में सीढ़ियों के नीचे वाली बखारी में रखवा दिए। बच्चे खेलकर लौटे तो फिर पूछने लगे ''माँ! पिताजी अँगीठी कब लाएँगे।

शाम ७ बजे के लगभग समीर लौट आए। बच्चे दौड़ कर उनके पास गए, पर आज वे खाने–पीने की वस्तुओं की जगह अँगीठी के लिए पूछ रहे थे। अँगीठी को देखते ही पीहू बोली ''माँ! यह गर्म तो है ही नहीं, इसमें ठण्ड कैसे दूर होगी।'' राखी ने कहा'' अभी ठहरो और देखो यह ठण्ड कैसे भगाती है।'' राखी ने एक पुराने कपड़े का टुकड़ा निकाला और समीर से कहा ''वह मिट्टी के तेल की बोतल उतार दे।'' राखी ने एक टोकरी पीहू को देते हुए कहा ''पीहू गली में सीढ़ियों के नीचे वाली बखारी में कोयले पड़े हैं, उन्हें इस टोकरी में भर कर ले आ।'' पीहू अपनी माँ की बात सुनकर भी वहाँ से नहीं हिली। राखी ने फिर कहा ''जाओ पीहू।'' पीहू ने कहा ''माँ आप ही ले आओ।'' तब तक समीर भी कपड़े बदलकर आ गए थे। उन्होंने पीहू को मना करते हुए सुन लिया तो उसे डाँटते हुए कहा– ''यह क्या तरीका है? तुम इतना सा काम भी नहीं कर सकती हो? जाओ जाकर कोयले लाओ।'' समीर की डाँट सुनकर पीहू का चेहरा डर से पीला पड़ गया। वह रुआँसी होकर बोली ''माँ मुझे गली में डर लगता है।'' समीर गुस्से से उसे डाँटने को हुए तो राखी ने उन्हें इशारे से रुकने को कहा।

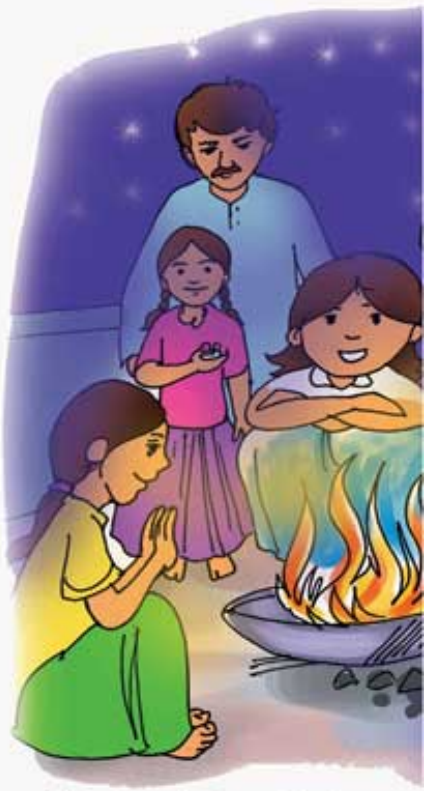

राखी ने कहा'' सब लोग सुनो, यह अँगीठी अब तभी जलेगी, जब पीहू बिना डरे गली से कोयले लेकर आएगी।'' राखी ने देखा पीहू का डर के मारे बुरा हाल था। उसका मुँह देखकर राखी को अपना बचपन याद आ गया। सबको भोजन करवा कर राखी बैठी, तो उसका मन अपने बचपन की गलियों में चला गया।

राखी का घर बहुत बड़ा था। उसके पिता प्रकृति प्रेमी थे। उनका घर पीछे की तरफ बना हुआ था और आगे के हिस्से में जो लगभग ५०X८० फिट जगह होगी उसमें बगीचा लगा हुआ था। उनके बगीचे में फूलों के पौधे, फलदार पेड़, मेंहदी के झाड़, सब्जियों के पौधे लगे हुए थे। बारहों महीने उनके यहाँ कोई न कोई फल सब्जियाँ लगती ही रहती थी। वहाँ जाने की सोचते ही उसकी घिग्घी बंध जाती थी। राखी के यहाँ हर संध्या तुलसी व केले के पौधों, बिल्व पत्र और आँवले के पेड़ों के सामने दीपक जलाया जाता था। राखी की माँ कभी राखी से दीपक रखने को कहती तो वह डरती–डरती तुलसी, केले व बिल्वपत्र के आगे तो दीपक रख देती थी, क्योंकि ये बरामदे के बिल्कुल

पास थे, पर वह आँवले के आगे दीपक रखने नहीं जाती। माँ कितना भी कहती, डाँटती तो भी वह टस से मस नहीं होती। एक बार राखी दीपक रखने के लिए मना कर रही थी तभी उसके पिताजी वहाँ आ गए। पिताजी ने राखी के मनोविज्ञान को समझते हुए कहा ''क्या बात है राखी बेटा! तुम आँवले के पास क्यों नहीं जा रही थी।'' राखी ने कहाँ ''आँवले के नीचे भूत रहता है।'' पिताजी ने कहा '' अच्छा! चलो कोई बात नहीं, तुम कहो तो मैं रख आऊँ।'' राखी ने हाँ में गर्दन हिला दी। उस दिन तो पिताजी दीपक रख आए। उसके बाद माँ ने राखी को दीपक रखने को नहीं कहा। दो–चार दिनों में राखी इस घटना को भूल चुकी थी। लगभग दस दिन बाद पिताजी कहानी सुनाने लगे तो उन्होंने ऐसे किस्से सुनाए जिससे यह सिद्ध हो गया कि भूत–वूत कुछ नहीं होता, बस एक डर है जो हमारे अंदर होता है। इसके तीन दिन बाद पिताजी ने कहा'' बच्चों! तुमको पता है यदि पेड़–पौधों को गीत संगीत सुनाया जाए, उनसे बातें की जाए तो वे अधिक हरे–भरे हो जाते हैं, अधिक फल–फूल देने लगते हैं और हमारे मित्र भी बन जाते हैं।'' पिताजी की बात सुन राखी ने पूछा '' सच पिताजी, क्या सचमुच ऐसा होता है?''

पिताजी ने पुस्तक में छपा एक लेख बताते हुए कहा– ''यह शत–प्रतिशत सत्य है।'' तब राखी और उसके भाई ने कहा, ''पिताजी हम रोज दिन में पेड़ों को गीत, कविता व भजन सुनाएँगे।'' पिताजी ने कहा ''दिन में नहीं कल शाम को हम सब यह कार्य करेंगे।'' दूसरे दिन शाम को पिताजी ने उन्हें बुलाया और कहा मैंने हर पेड़–पौधे के आगे चार–चार इलायची रख दी है। हम सब पेड़–पौधों को कम से कम दो मिनट तक गीत सुनाएँगे और एक इलाचयी उठा लेंगे। तुम दोनों में से जो ज्यादा इलाचयी लाएगा उसे दो कहानी की पुस्तकें पुरस्कार में मिलेगी, पर गीत जोर से बोलकर सुनाना होगा।'' राखी और उसका भाई बहुत उत्साहित थे। पिताजी ने दोनों भाई–बहनों को अलग–अलग दिशाओं से आरम्भ करने को कहा और खुद ने आँवले के पेड़ से शुरु किया। जब इन्होंने यह अनुष्ठान प्रारम्भ किया तब उजाला था, पर उत्साह में इन्हें पता ही नहीं चला कि कब अंधेरा हो गया। राखी एक–एक कर पेड़–पौधों को गीत सुनाकर इलायची उठाती हुई आँवले के पेड़ तक पहुँच गई और ''श्री रामचन्द्र कृपालु भज मन हरण–भव–भय–दारुणम्'' सुनाने लगी। प्रार्थना पूरी कर जब राखी इलायची उठाने लगी, तो उसके माँ–पिताजी ताली बजाते हुए उसके पास गए और उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा ''वाह राखी! तुमने आज डर के भूत को मार दिया है। देखो तुम कितनी देर से आँवले के पेड़ के पास अँधेरे में अकेली खड़ी हो।'' राखी अचंभित थी। उस दिन के बाद राखी को किसी भी जगह जाने में डर नहीं लगा।

समीर ने राखी को पुकारते हुए कहा ''कहाँ खो गई हो राखी?'' समीर की बात सुनकर राखी की चेतना लौटी। उसने समीर से कहा, ''अँगीठी एक तरफ रख दो, हम इसे अगले सप्ताह जलाएँगे।'' मन ही मन राखी ने अपने पिता को प्रणाम किया और पीहू के मन में बसे डर के भूत को भगाने की योजना बना ली। दो–तीन दिन बाद राखी और बच्चे टीवी देख रहे थे, तब टीवी पर एक विज्ञापन आया ''डर के आगे जीत है'' बस राखी को अवसर मिल गया उसने टीवी बन्द कर बच्चों को वे सभी किस्से सुनाए जो उसे उसके पिताजी ने सुनाए थे। उसने बच्चों से कहा ''डर बाहर कहीं होता ही नहीं है वह हमारे मन में होता है'' इतना ही कहकर उसने अपनी बात समाप्त कर दी।

तीन–चार दिन बाद राखी ने कुछ सुन्दर–सुन्दर पत्थर इकट्ठे किए और घर में अलग–अलग जगह छिपा दिए। अँधेरा होते ही उसने पीहू और कुहू को बुलाकर कहा ''तुम में से साइकिल किसको चाहिए।'' तो दोनों बोलने लगी ''मुझे चाहिए, मुझे चाहिए'' राखी ने एक पत्थर दिखाते हुए कहा ''देखो मैंने ऐसे पत्थर घर की कई जगहों

पर छुपा कर रख दिए हैं, तुम में से जो भी सबसे पहले और सबसे ज्यादा ढूँढ कर लाएगा उसे साइकिल मिलेगी।'' दोनों बच्चे जाने लगे तो राखी ने कहा ''ठहरो–ठहरो, पहले शर्त तो सुन लो। जैसे ही तुम्हें पत्थर मिले, तुम्हें एक से सौ तक गिनती बोलकर पत्थर उठाना है।'' दोनों दौड़–दौड़कर पत्थर ढूँढने लगी। घर के अन्दर के सभी पत्थर ढूँढने पर दोनों के पास बराबर पत्थर थे, पर जीतने की लिए अधिक पत्थर होना जरूरी था। साईकिल पाने के उत्साह में वे घर के बाहर खुली जगह में पत्थर ढूँढने लगी। बाहर बरामदे में, पानी की मोटर, बिजली के मीटर के पास ढूँढते हुए पीहू गली में सीढ़ियों के नीचे वाली बखारी तक चली गई। वहाँ राखी ने सबसे सुन्दर पत्थर रखा था। पत्थर देखते ही पीहू की बाँछें खिल गई। वह फटाफट गिनती बोलने लगी। उसकी आवाज आते ही राखी को लगा आज पीहू ने भी डर से आगे निकल कर जीत प्राप्त कर ली है। जैसे ही पीहू पचानवे, छियानवे बोलने लगी तो राखी ताली बजाते हुए वहाँ पहुँच गई। राखी ने कहा ''पीहू! देखो तुम कहाँ खड़ी हो।'' आज पीहू के चेहरे पर वही अचरज दिख रहा था, जो वर्षों पहले राखी के चेहरे पर था। राखी ने पीहू की पीठ थपथपाते हुए कहा '' शाबास बच्चे, आज तुमने अपने डर को जीत लिया है।'' सभी घर के अंदर आ गए। दो मिनिट बाद पीहू टोकरी में कोयले भर कर ले आई और बोली '' माँ! अब तो अँगीठी जलाएँ। आज तो ठंड भी बहुत अधिक है।''

समीर कार्यालय से लौटा जलती हुई अँगीठी को देख समझ गया कि राखी की योजना सफल हो गई। उसने मुस्कुराते हुए कहा ''आज तो उत्सव होना चाहिए। नई अँगीठी भी जली है और हमारी बहादुर पीहू का जन्म भी हुआ है।'' राखी ने कहा ''बिलकुल, इसी अँगीठी पर हलवा बनाती हूँ।'' राखी के चेहरे पर फैली खुशी की चमक अँगीठी के दहकते अंगारों से टक्कर ले रही थी।

• भीलवाड़ा (राज.)

संस्कृति प्रश्नमाला

- वनवास के समय किस नदी के तट पर श्रीराम ने महाराज दशरथ की अंतिम क्रियाएं की?
- महाभारत के युद्ध में मद्रराज शल्य किस महारथी के सारथी बने?
- मैक्सिकोवासी भारतीयों की तरह रोटी खाते हैं, वहाँ रोटी को क्या कहा जाता है?
- महाबली भीमसेन की पत्नी हिडिम्बा का भी एक मंदिर है, वह एकमात्र मंदिर कहाँ है?
- भगीरथ की तपस्या के परिणाम स्वरूप माँ गंगा धरती पर किस दिन आईं?
- पुष्यमित्र शुंग को क्रांति कर मगध पर अधिकार करने की प्रेरणा देने वाले उनके गुरु कौन थे?
- ईसा के तीन सौ साल पहले एक जैन आचार्य ने गणित के सिद्धांत बताये थे, वे कौन थे?
- सन् १९१२ में वायसराय हार्डिंग्ज पर दिल्ली में बम-प्रहार करने की योजना किस महान क्रांतिकारी ने बनाई थी?
- प्रसिद्ध हल्दीघाटी युद्ध जिस मैदान में लड़ा गया, उसको अब किस नाम से जाना जाता है?
- मंत्रों में रोगों की चिकित्सा करने वाले जबलपुर निवासी तथा इसरो के पूर्व वैज्ञानिक कौन हैं?

(उत्तर इसी अंक में)

(साभार : पाथेय कण)

झगड़े का अंत

चित्रकथा : देवांशु वत्स

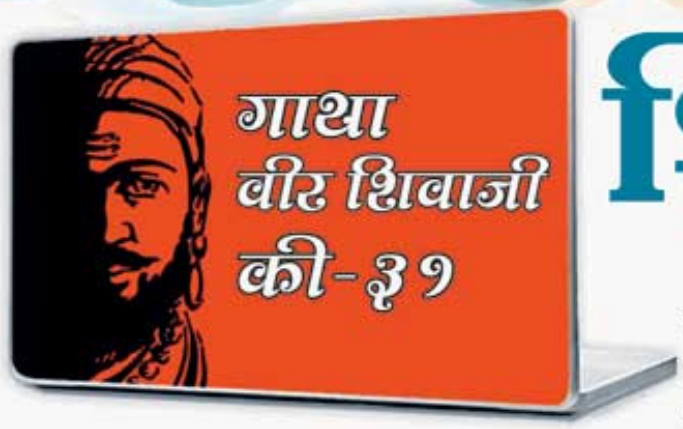

गाथा वीर शिवाजी की-३१

शिवार्चन

''वह पहाड़ कौन सा है?'' छत्रपति शिवाजी ने पूछ लिया। उनकी आँखें नीली-नीली पर्वतचोटी और हरीतिमा से पूर्ण उसकी उपत्यकता की शोभा पर जा टिकी थीं।

''वह श्रीशैलम् है, महाराज!'' जनार्दनपन्त ने उत्तर दिया, ''यहीं पर श्री मल्लिकार्जुन का प्रसिद्ध मंदिर है।''

महाराज की आँखें चमक उठीं। भाग्यनगरी (हैदराबाद) में एक महीने तक वैभवपूर्ण आतिथ्य पाकर भी विलास की माया उनके अन्तःकरण को छू भी न सकी थीं। शिव मंदिर में जाकर आराधना की उत्कट इच्छा जाग उठी। बोले- ''सेनापति! हम थोड़े से लोग मल्लिकार्जुन के दर्शन के लिए जायेंगे। शेष सेना आत्मकूट भेज दो।''

'जी, महाराज! सेनापति हम्बीरराव ने कहा- 'लेकिन मैं आपके साथ ही रहूँगा। यहाँ लुटेरे भिल्ल रहते हैं।'

छत्रपति मुस्कुराए, खैर तुम साथ चलना चाहते हो, तो चलो।

श्रीशैलम् के सर्वोच्च शिखर कैलास पर स्थित श्री मल्लिकार्जुन का प्राचीन शिव मंदिर सामने दिखाई देने लगा। जनार्दन पन्त तीर्थ की कथा सुनाते जा रहे थे- ''एक बार कार्तिकेय अपने माता-पिता से रुष्ट हो गये और इस श्रीशैलम् में आकर रहने लगे। शिव-पार्वती ने उन्हें बहुत मनाने का यत्न किया। देवताओं को भी उनके पास भेजा, लेकिन कुमार लौटने को राजी न हुए। माता-पिता का मन न माना और वे कुमार को देखने श्रीशैलम् आये। कार्तिकेय को यह बात पता चल गई, तो वे और दूर लोहाचल चले गये और शाप दिया कि जो स्त्री लोहाचल पर आयेगी, सात जन्मों तक विधवा होती रहेगी। शिव-पार्वती विवश हो श्रीशैलम् पर ही रुक गए, और वहीं से अपने पुत्र को स्नेह से देखते रहते।''

शिवाजी को एका-एक अपने पुत्र शम्भा जी की याद आ गई। लेकिन क्षण भर बाद, फिर वे शिव स्वरूप का चिन्तन करने लगे।

अब मंदिर का मुख्य द्वार निकट आ गया था। कितना विशाल द्वार! पर्वत चोटी पर कितने श्रम से यह सुन्दर मंदिर बनाया गया होगा। सभी उसके

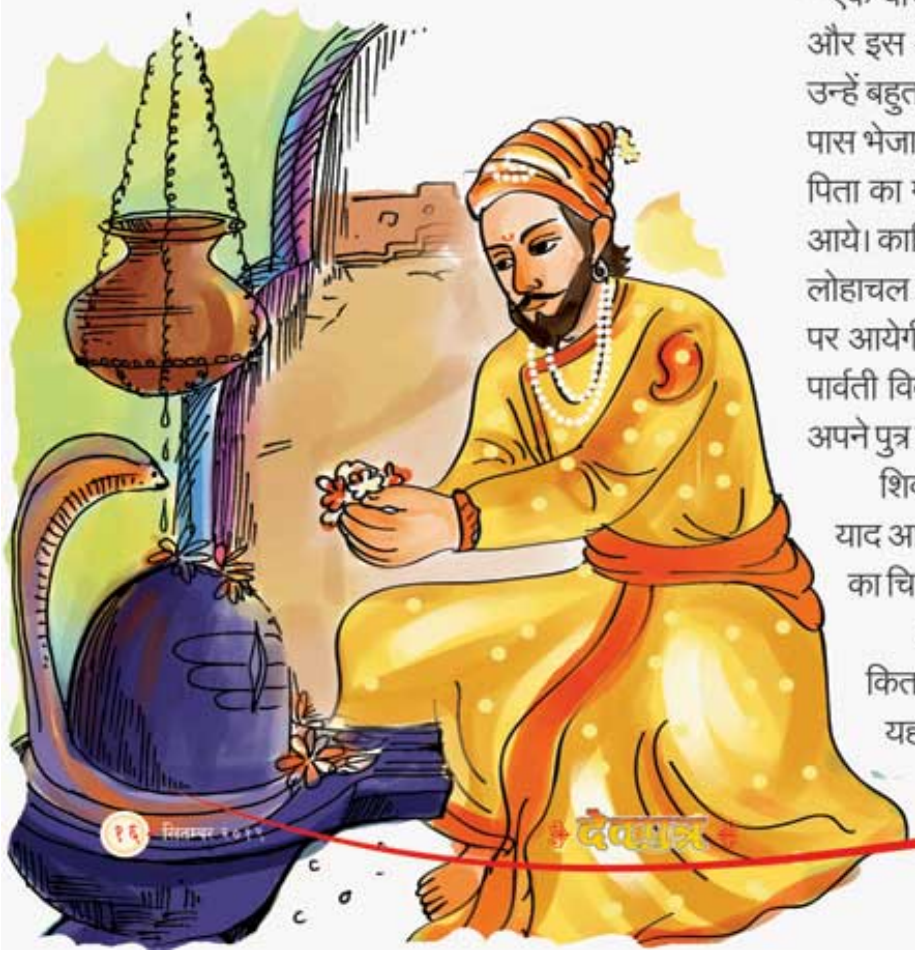

स्थापत्य को निहार रहे थे, लेकिन शिवाजी का मन शिव की भक्ति में विभोर था। पदत्राण उतार, जल से पैरों का प्रक्षालन कर, वे आतुरता से श्री मल्लिकार्जुन के दर्शन के लिए अकेले ही आगे बढ़े।

शिव के ज्योतिर्लिंग का दर्शन कर शिवाजी का मन आनन्द और भक्ति के अतिरेक से उमड़ पड़ा। स्तुति करते–करते वे ध्यानस्थ हो गये। सारे पार्थिव क्लेश और व्यथाएं लुप्त होकर, आत्मा परब्रह्म से एकाकार हो परम रस का अनुभव करने लगी।

महाराज के साथ कितनी ही देर खड़े रहे। वे प्रतीक्षा करते थक गये कि महाराज अब उठते हैं, तब उठते हैं लेकिन महाराज का मन तो शिव में लीन था। साथियों को साहस नहीं हो रहा था कि वे महाराज को ध्यानावस्था में से जगाएँ। एक घंटा बीता, दो बीते, तीन बीते आखिर क्यों–न हो? शाम होने चली।

अन्ततः प्रह्लाद पन्त ने हिम्मत जुटाई और बोले– ''महाराज, चलने के पहले कौन कौन से धर्मकृत्य हमें अभी और करने हैं?''

महाराज को बाहर की चेतना हुई। पलकें थोड़ी सी खुलीं। शिवाजी शान्त स्वर में बोले– 'नहीं पन्त, अब लौटना नहीं है हम यही रुकेंगे।''

''यहीं रुकेंगे? और सेना का क्या होगा? स्वराज्य का क्या होगा?''

लेकिन तब तक महाराज का सहज पवित्र मन फिर शिव के साथ एकाकार हो चुका था।

अब क्या करें? प्रतीक्षा करने के अतिरिक्त कोई चारा भी न था।

रात बीत गई। नया सवेरा उग आया। प्रह्लाद पन्त ने फिर कोशिश की– 'महाराज, हमें यथाशीघ्र लौट चलना चाहिए। आप यहाँ हैं, सेनापति भी यहीं हैं।

''आप सभी लौट जाए।'' पहले जैसा ही शान्त स्वर।

''आपको यहाँ अकेला छोड़कर?''

''आगे पीछे आपको हमें छोड़ना ही है। एक न एक दिन शिवाजी की मृत्यु होगी ही।''

''ऐसा न कहें महाराज।'' हम्बीरराव ने बीच में ही बात काट दी, ऐसी अशुभ बात आप अपने मुँह से न निकालें।''

शिवाजी मुस्कुराए। थोड़ी देर तक सभी साथी स्तब्ध खड़े रहे। जनार्दन पन्त ने एक ओर प्रयास किया– ''आप नहीं लौटे, तो महारानी क्या सोचेंगी?''

''कुछ नहीं। उसे यह ज्ञान होते ही कि हम अब लौट नहीं रहे हैं, रामराजा को सिंहासन पर जल्दी से जल्दी बिठा देने की जल्दी होगी– शम्भुराजा का उत्तराधिकार का दावा हड़पने की'' महाराज का स्वर थोड़ा कटु हो गया।

''और नहीं तो शम्भुराजा के ही हित में...।'

''नहीं जनार्दन पन्त! मानव को अपने प्रियजनों को कभी न कभी तो छोड़ना ही पड़ता है। हम सोचते थे कि बिना माँ के जी न सकेंगें। लेकिन माता जीजाबाई चली गयीं, पिता शाहजी राजा संसार में न रहे, तानाजी, बाजीप्रभु चले गये–फिर भी दुनिया चल रही है। हम भी हास्य विनोद करते हैं आज श्री मल्लिकार्जुन के चरणों में हमारे सभी दुःख मिट गये हैं। पन्त! हमें नहीं लौटना है। शम्भुराजा को सिंहासन पर बैठाओ, राज चलाओ।''

साथी निस्सहाय और दीन हो गये। वे अपने जीवनव्रत के नायक को छोड़कर कैसे जा सकते थे? वहीं बैठकर फिर प्रतीक्षा करने लगे।

दिन के बाद दिन बीते। सप्ताह बीत गया। दूसरा सप्ताह प्रारम्भ हो गया। साथी भी निराश होने वाले न थे। लेकिन नवें दिन महाराज ने कहा– ''पन्त! हम कल शिव की अंतिम पूजा करेंगे।''

''और उसके बाद हम लोग वापस चलेंगे, हैं न?'' पन्त प्रसन्न हो गये।

''हम महाशिव को कमल चढ़ायेंगे।''

''क्या हम कमल ले आयें?''

''नहीं जनार्दन पन्त ! सर्वोत्तम कमल हमारा मुण्ड हमारे पास है।''

साथियों की ऊपर की सांस ऊपर, नीचे की नीचे रह गयी। प्रह्लाद पन्त, जनार्दन पंत, येसाजी सभी पीले पड़ गए। हम्बीर राव ने भावावेश में महाराज के पैर पकड़ लिए– ''महाराज की अगर यही इच्छा है तो एक सौ एक कमलों से शिव की पूजा होगी–पहले आपके सेनापति का मुण्ड, फिर उसके सौ सिपाहियों के। और तभी आप राज कमल को छुएं।''

''नहीं, हम्बीरराव! केवल मुझे ही जाना है। मेरे मार्ग में बाधक न बनो।'' महाराज का स्वर कठोर हो गया था।''कल ब्रह्ममुहूर्त में शिव के लिए महाबलि अर्पित की जाएगी।''

''शिवाजी फिर ध्यानस्थ हो गये। हम्बीरराव उनके चरणों को आँसुओं से धोते रहे, अन्य साथी भी बच्चों की तरह बिलखते रहे।

साथी रोते–बिलखते सुस्त पड़ गए। नींद ने उन्हें अपने कोमल आँचल में ले लिया। महाराज ध्यानस्थ बैठे थे। एकाएक मंदिर स्वर्गीय प्रकाश से भर उठा। ज्योतिर्लिंग से माता भवानी प्रकट हुईं।

शिवाजी भक्ति से अभिभूत हो, बोल उठे– ''माँ! तू आ गई।''

''हाँ पुत्र! लेकिन तुम अपने कर्त्तव्य पथ से कहाँ भटक गए? क्या तुम्हारा जन्म मुक्ति पाने के लिए ही हुआ है? भगवान शिव ने ही तुम्हारे रूप में धरती पर जन्म लिया है और तुम भूल गए कि तुमने यह जन्म किसलिए लिया है? क्या करोड़ों लोगों की मुक्ति का मार्ग छोड़कर मात्र अपने लिए मुक्ति का पथ स्वीकार करना चाहते हो?''

एकाएक उन्हें तोपों की भयानक गर्जना सुनाई दी, कानों में तोड़े जाने की आवाज गूंजने लगी, वे पत्थर जो मंदिरों में लगे हुए थे स्त्री–पुरुषों, बच्चों की करुण चीखें आकाश को मानों चीरती जा रही हों।

शिवाजी ने दोनों हाथ कानों पर रख लिए – ''माँ! मुझसे यह सब नहीं सुना जा रहा है। माँ! मुझे क्षमा कर दें।''

''तो जाओ, जब तक धरती पर तुम्हारा जीवन है, अपने कर्तव्य का पालन करो। मेरी दी हुई तलवार को विश्राम न दो कि मंदिर तोड़ने की आवाजें और निरीह जनता की करुण पुकारें इस भारत भूमि में सुनाई दें।''

''माँ! ऐसा ही करूँगा''– छत्रपति ने माँ के चरणों पर माथा रख दिया।

पूजा पूरी हो चुकी थी।

''हम्बीरराव'' –महाराज ने सेनापति को पुकारा।

''जी, महाराज!'' हम्बीरराव के माथे पर चिन्ता स्पष्ट झलक रही थी।

''कल हम...।''

''नहीं, नहीं यह होने नहीं देंगे''– हम्बीर राव चीख पड़े।

''हम कल कर्नाटक की ओर प्रस्थान करेंगे।'' महाराज ने सांत्वना के स्वर में कहा।

साथियों का विषाद मिट गया। चेहरे सन्तोष और प्रसन्नता से दमकने लगे। मंदिर उनके जयघोष से गुंजित हो उठा।

''हम अभी चलने को तैयार हैं, महाराज!'' हम्बीर राव ने निवेदन किया।

छत्रपति मुस्करा दिए।

''परमात्मा ने हमारी प्रार्थना सुन ली है।'' जनार्दन पन्त ने कहा, ''श्रीमान! हमें एक दिन और रुकने की अनुमति दें।''

''किसलिए?''

''हम कल भगवान शिव की पूजा एक सौ एक कमलों से करेंगे।''

कैलाश शिखर में 'छत्रपति शिवाजी की जय' का घोष फिर एक बार गूंज उठा और श्रीशैलम् की पर्वतमाला पर तैर गया। पूर्व दिशा में उषा की लाली उभरने लगी थी। अंशुमाली अंधेरे को चीर कर फिर अपनी यात्रा प्रारम्भ करने जा रहे थे।

और जनार्दन पन्त अपने साथियों के साथ कमल लाने के लिए शिखर से नीचे उतर रहे थे। ●

।। १४ सितम्बर : हिन्दी दिवस ।।

हिन्दी

कविता : रामगोपाल 'राही'

निज राष्ट्र चेतना निज भाषा
स्वाभिमान सभी का होता है।
अभिव्यक्त राष्ट्र की भाषा में
संज्ञान सभी का होता है।।

अनुरक्त देश के तन मन में,
हिंदी वो जीवन धारा है।
हिंदी निज राष्ट्र भाषा से,
गर्वित यह देश हमारा है।।

हर देश का अपना चिंतन व
भाषा भी अपनी होती है।
स्वच्छंद सोच व अभिव्यक्ति
निज भाषा में ही होती है।।

सब लिख पढ़ बोले व्यापक हो,
भाषा वह प्यारी होती है।
जाने जन राष्ट्र के अधिसंख्य,
वो राष्ट्र की भाषा होती है।।

निज राष्ट्र की अपनी भाषा में,
संस्कार परिष्कृत होते हैं।
निज कंठ में निज-वाणी हो
विचार अधिकृत होते हैं।।

सच कहता सबको हिन्दी ही
कर्तव्य सिखाने वाली है।
संविधान देश की गरिमा की
हर बात बताने वाली है।।

यहाँ लोकतंत्र का शासन है,
स्वच्छंद सभी है भारत में।
हर बात राष्ट्र की भाषा में,
जानेंगे अपने भारत में।।

निज राष्ट्र-भाषा हिंदी का
सम्मान देश में ऊँचा हो।
शासन के ढंग प्रणाली में,
हिंदी का दर्जा ऊँचा हो।।

जय भारत भारत माता की
जय भव्य भारती हिंदी की।
भाषाएँ अनेकों, जग में हो,
छवि विस्तृत व्यापक हिंदी की।।

अब भव्य भारती-हिंदी ही,
हो विश्व आरती-हिंदी ही।
जग, सृष्टि, दशों दिशाओं में,
हो महाआरती हिंदी ही।।

सच बात अनोखी हिंदी की,
सच गरिमा महिमा हिंदी की।
हर कोई इसका अपना है,
है सोच शाश्वत हिंदी की।।

• लाखेरी (राज.)

(बाल प्रस्तुति)

धत् तेरे की

कविता : देवेन्द्र सुथार

नमस्कार को टाटा खाया,
नूहल को खाया आटा।
अंग्रेजी के चक्कर में बड़ा हुआ है घाटा।
बोलो धत् तेरे की...
माताजी को मम्मी खा गई,
पिता को खाया डैड।
दादाजी को ग्रांड पा खाया सोचो कितना बैड।
बोलो धत् तेरे की...
चौपालों को बार खा गया,
रिश्ते खाया टी.वी.।
देख सीरियल लगा लिपस्टिक
बक-बक करती बीबी
बोलो धत् तेरे की...
रसगुल्ले को केक खा गया,
दूध पी गया अण्डा।
दातून को टूथपेस्ट खा गया,
छाछ पी गया ठण्डा
बोलो धत् तेरे की...
बातचीत को चैट खा गया, चिट्ठी पत्री नेट।
हुतूतू को ताश खा गई,
गिल्ली खाया बेट।
बोलो धत् तेरे की...
परम्परा को कल्चर खाया,
हिन्दी को अंग्रेजी।
दूध, दही के बदले पीकर चाय, बने हम तेजी
बोलो धत् तेरे की...

- बागरा (राज.)

सही उत्तर : उलझ गए - मोहन फोटो वाली स्त्री का भाई है।

दूध का ऋण

लघुकथा : गोविन्द भारद्वाज

एक दिन की बात है। मोहनलाल गुरुजी अपने विद्यालय में प्रातः आठ बजे विद्यार्थियों को दूध वितरित कर रहे थे। सभी बच्चे पंक्तियों में खड़े अपनी बारी का इंतजार कर रहे थे। उसी समय कुछ बच्चे चौथी कक्षा में पढ़ने वाले एक बालक को खींच रहे थे। वह अपने आप को उनसे छुड़ाने का प्रयास कर रहा था।

उसी समय मोहनलाल की दृष्टि उस बच्चे पर पड़ी। उन्होंने उन छात्रों को टोकते हुए कहा, ''अरे, क्यों घसीट रहे हो कलुवा को। उसकी कमीज तो पहले से ही फटी हुई है और फाड़ोगे क्या?''

''गुरुजी! देखो इसके बस्ते को। ये कुछ छुपाकर घर ले जा रहा था। हम सब ने इसे पकड़ लिया।'' एक बच्चे ने गुरु जी को हाँफते हुए कहा। कलुवा गुरूजी के सामने थर-थर काँपने लगा। मोहनलाल गुरूजी ने उसे डॉटते हुए पूछा, ''क्या चुराया है कलुवा तू ने। चल जल्दी से बस्ता दिखा।'' कलुवा बस्ता खोलता उससे पहले ही एक अन्य बालक ने उसका बस्ता खोल दिया। कलुवा के बस्ते में एक छोटी सी शीशी निकली। उस शीशी को देखकर गुरुजी ने पूछा, ''क्या है इस शीशी में कलुवा?'' ''जी द...द...दूध ।'' कलुवा ने घबराते हुए कहा। तभी पास में खड़ा लड़का बोला, ''गुरुजी! थोड़ी देर पहले जो आपने इसे दूध पीने के लिए दिया था ना...वही दूध ये शीशी में डालकर घर ले जा रहा था।'' ''क्यों रे कलुवा! ऐसा क्यों किया तुमने?''

''वो...गुरुजी मेरी माँ बहुत अस्वस्थ है। डाक्टर ने दवा देते समय कहा था कि माँ को दवा दूध के साथ देना है। बस इसलिए अपने हिस्से का दूध माँ के लिए ले जा रहा था।'' कलुवा की विवशता देख गुरुजी को दया आ गई।

उन्होंने कहा, ''बेटा! माँ के दूध का ऋण उतार रहा था क्या?'' ''नहीं गुरु जी माँ के दूध का ऋण तो मैं कभी नहीं उतार सकता। बचपन में माँ ने मुझे भूखे-प्यासे रहकर अपना दूध पिलाया था। बस मैं तो उनके प्राण बचाने का छोटा-सा प्रयास कर रहा था।'' कलुवा ने छोटे मुँह से इतनी बड़ी बात कही। गुरुजी ने बोला, ''बेटा! तुम ने किया वो बहुत अच्छा किया। किन्तु बेटा चोरी तो चोरी होती है न। हम तुम को सत्य की बातें सिखाते हैं आज के बाद ऐसा मत करना। तुम्हारी माँ की सहायता हम सब करेंगे।'' इतना सुनकर कलुवा के मुख पर चमक आ गई। उसने गुरुजी के पैर पकड़ते हुए कहा, ''गुरुजी आज की भूल के लिए क्षमा कर दो।'' गुरू जी मोहनलाल ने उसे गले से लगा लिया। वहाँ खड़े सब बच्चे भी कलुवा से मिल रहे थे।

● अजमेर (राज.)

सही उत्तर : संस्कृति प्रश्नमाला

मंदाकिनी, कर्ण, रोटली, मनाली (हि.प्र.)
ज्येष्ठ शुक्ल १० (गंगा दशहरा),
महर्षि पतंजलि, आचार्य भद्रबाहु,
रासबिहारी बसु, रक्त तलाई,
डॉ. शिव कुमार कोष्टा

।। विश्वकर्मा जयंती : १७ सित. ।।

शिल्पी बालक धर्मपद

कहानी : गंगाराम शर्मा

एक समय की बात है जब उड़ीसा को (कलिंग) उत्कल देश (कलिंग) के नाम से जाना जाता था। उस समय के राजा लांगुला नरसिंह देव एक दिन अपने मंत्री के साथ समुद्र के किनारे प्रातः काल घूम रहे थे। राजा ने अपने मंत्री से कहा– ''मंत्री जी ! मेरी माताजी की अंतिम इच्छा थी कि समुद्र के किनारे सूर्य देव का मंदिर बने। इनकी इच्छा मैं आज तक पूरी न कर सका।'' मंत्री बोले– ''राजन! आप आदेश दीजिए आपकी माताजी की अंतिम इच्छा अवश्य पूरी होगी।'' महाराज बोले– ''मंत्री जी हमारे राज्य के प्रसिद्ध शिल्पी विशु महाराणा के दायित्व में राज्य के समस्य शिल्पियों (कारीगरों) को आदेशित किया जाए कि वे तत्काल राज दरबार में उपस्थित हों।''

महाराज की आज्ञा से प्रमुख शिल्पी विशु महाराज के साथ राज्य के बारह सौ कारीगरों के साथ समुद्र के किनारे भगवान सूर्य देव के मंदिर का निर्माण प्रारम्भ हुआ। राजा ने आदेश दिया कि मंदिर विश्व का सर्वश्रेष्ठ मंदिर होना चाहिए साथ ही आने वाले बारह वर्ष में कार्य पूर्ण होना चाहिए। आपके रहने एवं भोजन की व्यवस्था राज्य की ओर से रहेगी। बारह सौ कारीगरों के साथ प्रमुख शिल्पी विशु महाराणा के दिन–रात कार्य करते हुए बारह वर्ष की अवधि समीप आ गई। मंदिर बनकर तैयार हो गया परन्तु सभी के प्रयत्न के बाद भी मंदिर का शिखर बन नहीं पाया। प्रयत्न करने पर भी वह बार–बार गिर जाता था। राजा ने आदेश दिया कि शिखर पूर्ण न होने पर सभी को मृत्यु–दण्ड दिया जाएगा।

प्रमुख शिल्पी विशु महाराणा जब राज दरबार में मंदिर निर्माण के लिए गया था तब उसका बालक गर्भावस्था में था। अब वह बालक १२ वर्ष का हो चुका था उसका नाम था धर्मपद। तब एक दिन उस बालक ने जिसका नाम धर्मपद था। उसने अपनी माता से कहा– ''माँ! प्रतिदिन शाला में मेरे सहपाठी और गुरुजन पूछते हैं कि ''तेरे पिता कौन है और कहाँ है? जब तक तू मुझे उनके बारे में नहीं बताएगी तब तक मैं न भोजन करूँगा, न विद्यालय जाऊँगा।'' माँ ने कहा, ''बेटा! धर्मा!, तेरे पिता राजा के आदेश से चन्द्रभागा क्षेत्र में अनेक शिल्पियों के साथ सूर्य मंदिर का निर्माण कर रहें हैं।'' बालक बोला–''माता! मैं उनसे मिलने अवश्य जाऊँगा।''

माँ बोली– ''हाँ बेटा! चले जाना पहले भोजन कर ले।'' बालक ने कहा, ''माता! मेरे पिताजी का नाम क्या है? मैं उन्हें कैसे पहचानूँगा?'' तब माता ने कहा– ''बेटा तेरे पिताजी का नाम विशु महाराणा है। उन्हें बेर के फल बहुत पसंद हैं। इससे तू उन्हें पहचान जाएगा।'' माता की बात सुनकर बालक ने भोजन किया। प्रातःकाल उठकर अपनी माता से कहा– ''माँ! मुझे बेर के फल दो मैं अपने पिताजी के पास उनसे मिलने जा रहा हूँ।'' बालक धर्मपद अपनी माता से बेर के फल लेकर अपने पिताजी से मिलने के लिए चल पड़ा।

प्रमुख शिल्पी विशु अपने साथियों से कह रहा था कि समय बीतता जा रहा है आज तक हम मंदिर का शिखर नहीं बना पाये बार–बार कोशिश करने पर भी वह गिर जाता है। राजा हमें मृत्युदण्ड देंगे। उसी समय बालक धर्मपद वहाँ पहुँच जाता है। वह पूछता है कि विशु महाराणा कहाँ है? विशु कहता हैं बेटे! क्या काम है?'' ''मैं उनका पुत्र हूँ। मैं गाँव से उनसे मिलने के लिए आया हूँ। कृपया मेरी सहायता करो।'' विशु ने पूछा ''क्या तुम मेरे पुत्र हो! हाँ बेटा! मैं ही तुम्हारा अभागा पिता हूँ।''

धर्मपद बोला, ''पिताजी! अभी तक आप घर नहीं आये।'' विशाल मंदिर को देखकर धर्मपद बोला ''पिताजी! इतना विशाल और सुन्दर मंदिर बड़ा आनन्द देने वाला है।'' विशु बोला– ''बेटा! मंदिर का शिखर अभी तक नहीं चढ़ा है हमारे बार–बार प्रयत्न करने पर भी वह गिर जाता है। इसलिए राजा ने आदेश दिया है कि कल सूर्योदय से पूर्व यदि शिखर पूर्ण नहीं हुआ तो सबको मृत्यु दण्ड दिया

जाएगा। कल से सारा उत्कल राज्य शिल्पी विहीन हो जाएगा।

धर्मपद बोला– ''पिताजी एक बार मुझे आज्ञा दीजिए मैं शिखर के लिए प्रयत्न करता हूँ।'' विशु बोला ''बेटा! जब बारह सौ कारीगरों के साथ मैं शिखर पूर्ण नहीं कर सका तब तुम बारह वर्ष के बालक क्या करोगे?''

धर्मपद– किन्तु पिताजी! कभी कभी छोटा भी बड़े से बड़ा कार्य पूर्ण कर लेता है।''

विशु बोला– ''नहीं पुत्र! इतने विशाल मंदिर पर तुम कैसे चढ़ कर शिखर निर्माण कर सकोगे?''

धर्मपद–''पिताजी! बालक ध्रुव ने ईश्वर को प्राप्त किया, महाभारत के युद्ध में अभिमन्यु ने वीरता का प्रदर्शन किया। एक बार आप मुझे आज्ञा दीजिए। मुझे विश्वास है कि मैं अवश्य इस कार्य में सफल हो जाऊँगा।''

विशु–''मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है। जाओ और शिखर निर्माण करो।''

अपने पिता की आज्ञा से बालक धर्मपद मंदिर के ऊपर चढ़कर शिखर निर्माण करने लगा। कुछ समय बाद उसने शिखर का निर्माण कर दिया। जिसे देखकर सभी शिल्पी बड़े प्रसन्न हुए किन्तु एक दूसरे से कहने लगे कि यदि राजा को यह पता लगा कि एक बालक ने शिखर का निर्माण किया है तो राजा हमें अवश्य मृत्युदण्ड देंगे। शिल्पियों की बात सुनकर धर्मपद बोला–''सूर्योदय से पूर्व मैं समुद्र में कूदकर अपने प्राणों को त्याग दूँगा।''

आप लोगों को मैं जीवन दान दिलवाऊँगा। आप सभी मुझे आशीर्वाद दीजिए। ऐसा कहकर बालक धर्मपद समुद्र में कूद गया और अपने प्राणों का बलिदान कर दिया।

धन्य है वह शिल्पी बालक, धर्मपद जिसने अपना बलिदान देकर सभी शिल्पियों को मृत्युदण्ड से बचाया।

● तलेन (म.प्र.)

कव्वा

● सुरेशचन्द्र 'सर्वहारा'

जैसी भी है वैसी वाणी
बोल रहा है कव्वा,
जैसा कण्ठ मिला वैसे सुर
ढोल रहा है कव्वा।

नहीं शर्म यह अनुभव करता
पाकर भी तन काला,
भोला इतना कोयल के भी
अण्डों को है पाला।

सहज सरल जीवन जीता है
जो मिल जाए खाता,
दूर दूर तक भरे उड़ानें
सुबह शीघ्र उठ जाता।

मानव बस्ती की जूठन खा
रखता साफ सफाई,
बिन इसके जो क्षति होएगी
है मुश्किल भरपाई।

रंग रूप पर हम ना जाएँ
हो गुणियों का आदर
कव्वे पर भी प्यार लुटाएँ
कोयल सा अपनाकर।

● कोटा (राज.)

कब्बू भैया

● सीताराम गुप्ता

कब्बू भैया कब्बू भैया आओ जी
पर अपने फैलाओ जी
उड़के भी दिखलाओ जी
नाच-नाचकर गाना गाकर
मन मेरा बहलाओ जी
कब्बू भैया कब्बू भैया आओ जी।
चोंच अपनी दिखलाओ जी
चोंच से दाना खाओ जी
गरदन को मटकाओ जी
फुर्र से तुम उड़ जाओ जी
कब्बू भैया कब्बू भैया आओ जी।
आसमान में ऊँचे उड़कर
फौरन लौट के आओ जी
साथ में मेरे फिर से खेलो
फिर से मुझे रिझलाओ जी
कब्बू भैया कब्बू भैया आओ जी।

● दिल्ली

कल्पना अनेक

कौआ

● आचार्य बलवन्त

काँव-काँव चिल्लाता कौआ।
नहीं किसी को भाता कौआ।
बच्चों के हाथों की रोटी
छीन-झपट कर खाता कौआ।

काम समय पर करता कौआ।
किसी से नहीं डरता कौआ।
देश-प्रदेश में अलग-अलग
नामों से जाना जाता कौआ।

देख घड़े में थोड़ा पानी।
कंकड़ से रच नई कहानी।
देखो, कितनी चतुराई से
अपनी प्यास बुझाता कौआ।

भले हो उसकी कर्कश वाणी।
कौआ है सामाजिक प्राणी।
सारे कौए शोक मनाते
जब कोई मर जाता कौआ।।

● बैंगलुरु (कर्नाटक)

बच्चो! ऊपर के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों की कविताएँ पढ़कर नीचे दिए खाली स्थान पर आपको 'कौआ' विषय पर ही अपनी कल्पना को पंख लगाकर एक प्यारी सी कविता लिखना है।

आपकी कविता

.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....

सचित्र विज्ञान चर्चा- संकेत गोस्वामी

डर क्या है?

डर एक ऐसी भावना है जो अनजाने और अचानक घटने वाली घटनाओं के फलस्वरूप उत्पन्न होती है और इस भावना के अन्तर्गत व्यक्ति उस स्थिति से बचने या भागने का प्रयास करता है।

कुछ लोगों या बच्चों में यह भावना अन्य की अपेक्षा अधिक होती है। वर्तमान खोजों के अनुसार स्वभाव भी आनुवंशिकता पर निर्भर करता है अर्थात लोग डरपोक या जरूरत से ज्यादा निर्भीक आनुवंशिक अंतर के कारण होते हैं।

स्वभाव के इस अंतर में जीनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रत्येक व्यक्ति के मस्तिष्क में विभिन्न रसायनों का मिश्रण पाया जाता है, किन्तु सभी में उसकी मात्रा एक सी नहीं होती। मात्रा की यह विभिन्नता ही स्वभाव का निर्धारण करती है, चूंकि यह द्रव ही तंत्रिकाओं को उत्प्रेरित करने का काम करते हैं, इसलिए यही किसी बच्चे को ज्यादा चुस्त या सुस्त भी बनाते हैं।

यह देखा गया है कि मस्तिष्क का एक विशिष्ट एवं आवश्यक अंग 'एमाइग्डेला' यानी अनुमस्तिष्क पालि, डर संबंधी प्रतिक्रियाओं के प्रति अधिक संवेदनशील होता है। विशेष बात यह है कि यह 'एमाइग्डेला' भी मस्तिष्क में दाहिनी और ही स्थिति होता है। प्रत्येक 'एमाइग्डेला', फ्रंटल कॉर्ट्रेक्स से संवेदी सूचनाएं ग्रहण करता है। जिन बच्चों का दाहिना फ्रन्टल कॉर्टेक्स अधिक सक्रिय होता है उनका दाहिना 'एमाइग्डेला' भी बाएं की अपेक्षा अधिक सक्रिय होता है जो डर की भावना को बढ़ाता है।

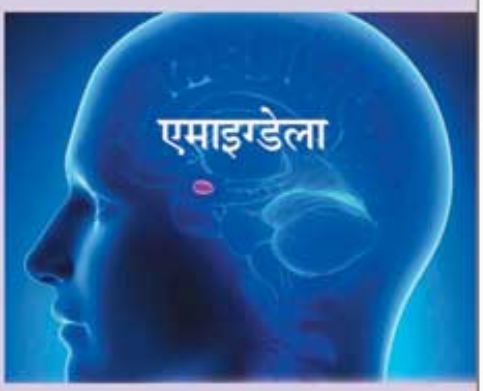

कुछ मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि डर कोई जन्मजात भावना नहीं है, बल्कि उन परिस्थितियों के फलस्वरूप उत्पन्न होती है, बच्चा जिन परिस्थितियों के लिए तैयार नहीं होता। डर भी कई तरह का हो सकता है जैसे कि कई बार किसी परिस्थिति की कल्पना मात्र से ही डर लगने लगता है अर्थात कभी-कभी यह डर, किसी कुंठा या दुश्चिंता का परिणाम होता है और कई बार किसी परिस्थिति या वस्तु को लेकर जन्मी डर की भावना व्यक्ति पर इस कदर हावी हो जाती है कि उसका समाधान कठिन हो जाता है। यही होता है फोबिया।

विशेषज्ञों के अनुसार किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में पचास प्रतिशत प्रभाव आनुवंशिक कारकों का होता है तो पचास प्रतिशत आस-पास के वातावरण का। इसलिए यदि आरंभिक अवस्था में ही बच्चे के स्वभाव को समझ कर उसके अनुसार ही उसे सही दिशा और सही सामाजिक वातावरण दिया जाए तो उसके व्यक्तित्व का सही विकास संभव है और उसे जीवनपर्यन्त यह जानने की जरूरत भी नहीं पड़ेगी कि ***डर क्या है ?***

समाप्त

।। अंधश्रद्धा निर्मूलन दिवस : २१ सितम्बर ।।

भूतहा शौचालय

कहानी : संतोष शर्मा

विद्यालय के शौचालय में जाने के बाद एक छात्रा दौड़ती हुई कक्षा में लौटी और भूत–भूत कहती हुई अचेत हो कर धरती पर गिर गई। छात्रा का नाम शम्पा कुण्डू है। वह १०वीं कक्षा में पढ़ती है। शम्पा की ऐसी डरी हुई स्थिति देखकर कक्षा की अन्य छात्राएँ भी भयभीत हो गईं। यह बात तुरंत कक्षा आचार्य को बताई गई। वे कक्षा में पहुँचे। एक छात्रा ने शम्पा के मुँह पर पानी के छींटे मारे और पंखे से हवा दी।

कुछ देर बाद शम्पा! को चेतना आई और चुपचाप बड़ी–बड़ी आँखें कर देखने लगी।

शिक्षक ने पूछा– ''शम्पा तुम यूं भूत–भूत क्यों चीख रही थी?''

एक बोतल से दो घूँट पानी पीने के बाद भयभीत सी शम्पा ने धीमे स्वर में कहा, ''विद्यालय के शौचालय में भूत है। एक लड़के का भूत है। मैंने अपनी आँखों से भूत देखा। वो मुझे घूर रहा था।''

''देखो, भूत–प्रेत कुछ भी नहीं होता है। तुम्हे भ्रम हुआ होगा। संभवतः तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं है। तुम अभी घर चली जाओ। विश्राम करो।'' यह समझाते हुए शिक्षक ने शम्पा को विद्यालय से छुट्टी दे दी।

शम्पा का विद्यालय से जल्दी घर लौटते देख माँ ने पूछा, '' विद्यालय की इतनी जल्दी छुट्टी हो गई?

इसका उत्तर दिए बिना ही शम्पा अपने कमरे में चली गई।

काफी देर के बाद भी बेटी को कमरे से बाहर नहीं निकलते देख माँ उसके कमरे में गयी तो देखा, शम्पा बिस्तर पर लेटी हुई थी।

बेटी के सिर पर प्यार भरे हाथ रखकर माँ ने पूछा, ''क्या हुआ, तू इतनी थकी हुई क्यों लग रही है? सब कुछ ठीक–ठाक है न? तेरा स्वास्थ्य अचानक बिगड़ा हुआ क्यों लग रहा है। विद्यालय में कुछ गड़बड़ी हुई है क्या?''

इतने सारे प्रश्नों का उत्तर देने की अपेक्षा शम्पा माँ से लिपट कर रोने लगी।

यह देख माँ ने पूछा, ''अरे क्या हुआ, तू रो क्यों रही है?''

आँखों में आँसू पोंछते हुए शम्पा ने कहा, ''मैंने विद्यालय के शौचालय में एक लड़के का भूत देखा। वह मुझे अपलक दृष्टि से देख रहा था। वह मुझे अपनी ओर बुला रहा था। मैं बहुत डर गई। मुझे अब भी डर लग रहा है।''

यह सुनकर माँ अत्यंत घबरा गई।

माँ ने कहा, ''डरने की बात नहीं है बेटी! चलो तुम्हें ओझा के पास ले जाती हूँ। वह तुम्हारी झाड़–फूँक कर देगा।''

माँ ने बेटी को उपचार के लिए अस्पताल या किसी डाक्टर के पास ले जाने की अपेक्षा वासुदेव गाँव में रहने वाले ओझा दंपति शीतल बाग और शिखाबाग के घर पर ले गई।

ओझा दंपति ने शम्पा की कुछ देर तक झाड़–फूँक की। इसके बाद शीतल ओझा ने कहा, ''मुझे पहले से ही जिस बात का डर था वहीं हुआ। तुम्हारा भाग्य अच्छा था। नहीं तो वह आज तुम्हारे प्राण अवश्य ले लेता।''

घबराती हुई शम्पा की माँ ने पूछा, '' कौन मेरी बेटी के प्राण ले लेता? क्या कुछ बुरा हुआ है मेरी बेटी के साथ किस बात का डर है ओझा जी?''

''संजय साँतरा की अतृप्त आत्मा जो आज विद्यालय में भटक रही है।'' ओझा ने कहा।

''संजय एक होनहार छात्र था। न जाने किस कारण उसने आत्महत्या कर ली। उस छात्र का विद्यालय से बहुत लगाव था। मरने के बाद भी उसकी आत्मा की मुक्ति नहीं मिली। परिणाम संजय की अतृप्त आत्मा विद्यालय में आज भी भटक रही है।''

शीतल ने आगे और कहा, ''अरूप मंडल नामक एक अन्य युवक की हादसे में मौत हो गयी थी। संजय और अरूप इन दोनों की अतृप्त आत्माएँ विद्यालय में अब भी भटक रही हैं। इन दोनों के अतिरिक्त भी और कई अतृप्त आत्माएँ भूत के रूप में विद्यालय के आसपास, शौचालय आदि में कभी–कभार दिख जाती हैं।''

''ये भटकती आत्माएँ विद्यालय की किसी न किसी छात्रा को अपने वश में करने का पूरा प्रयत्न कर रही है और ऐसा ही हुआ था। एक अतृप्त आत्मा ने शम्पा को वश में कर लिया था। किन्तु भाग्य अच्छा था कि वह तुम्हें क्षति नहीं पहुँचा पायी।

ओझा ने कहा, ''मैं शम्पा की एक बाद झाड़-फूँक कर उस पर चढ़े भूत को भगा देता हूँ लेकिन चिन्ता तो विद्यालय की छात्र-छात्रा को लेकर हो रही है क्योंकि ये अतृप्त आत्माएँ आज नहीं तो कल किसी न किसी को अपना ग्रास अवश्य बनाएँगी।''

शम्पा की माँ ने पूछा, ''क्या इससे मुक्ति का कोई उपाय नहीं हैं?''

शिखा ओझा ने कहा, ''ऐसी आत्माओं से मुक्त करने के लिए विद्यालय में तंत्र-मंत्र व झाड़-फूँक करने की बात कही थी लेकिन किसी ने मेरी एक नहीं सुनी और आज इसकी हानि विद्यालय की छात्राओं को भुगतना पड़ रही है।''

''मुझे डर है अब ये आत्माएँ किसी न किसी के प्राण न ले ले।'' ये बातें कहते हुए ओझा दंपति ने अपने माथे का पसीना पोंछा।

शम्पा के बायीं बाह में लाल धागे में पिरोकर एक रक्षाकवच बाँधते हुए शिखा ओझा ने कहा, ''यह रक्षाकवच अपने से दूर नही करना। भूत तुम्हारा अब कुछ भी बिगाड़ नहीं पाएगा।''

शम्पा को कुछ जड़ी-बूटियाँ दीं और ओझा दंपत्ति ने सुझाव दिया, ''इसे गंगा जल के साथ पीसकर पी लेना। तू ठीक हो जाएगी।''

दूसरे दिन शम्पा विद्यालय गई तो कक्षा की सहपाठी पूछने लगी, ''शम्पा, कल तुम्हें क्या हुआ था? तुम्हारा स्वास्थ्य अभी ठीक है न?''

इस पर शम्पा ने ओझा बाग दंपत्ति के यहां जाने की बात बताई ओर कहा, ''विद्यालय के शौचालय में भूतों का डेरा बना हुआ है। विद्यालय परिसर में एक नहीं, कई अतृप्त आत्माएँ मंडरा रही हैं। ये भूत हमें पकड़ना चाहते हैं।''

''शौचालय जाने पर एक भूत मेरे पर चढ़ गया था।

ओझा ने झाड़-फूँक कर उसे भगा दिया।''

कुछ ही देर में शम्पा की कहीं बातें कानों-कान पूरे विद्यालय में लगभग सभी छात्र-छात्राओं के कानों तक पहुँच गई कि विद्यालय के शौचालय में भूत है।

इसके कुछ देर बाद विद्यालय में शौचालय जाने वाली एक के बाद एक छात्रा विचित्र हावभाव करने लगी, भूत-भूत कहकर छात्राएँ बेहोश होने लगीं। देखते ही देखते लगभग पन्द्रह -बीस छात्राओं का स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया। विद्यालय में आपाधापी की स्थिति उत्पन्न हो गई। शौचालय में भूत होने की बातें विद्यालय के आस-पास के क्षेत्र में भी जंगल की आग की तरह फैल गई। छात्राओं के परिजन भागते हुए विद्यालय पहुँचने लगे। उपचार के लिए कई छात्राओं को स्थानीय अस्पताल में भर्ती भी करवाना पड़ा।

यह भूतही घटना पश्चिम बंगाल के बाँकुड़ा जिले के कोतुलपुर थाना अंतर्गत मिर्जापुर उच्च माध्यमिक विद्यालय की है।

विद्यालय के कार्यवाहक प्रधान शिक्षक महानंद कुंडू ने कहा, ''शौचालय से लौटने के बाद कई छात्राओं का स्वास्थ्य अचानक बिगड़ गया। दस-बारह छात्राएँ अचेत भी हो गईं। किसी की छाती में तो किसी के सिर में पीड़ा भी हो रही थी।'' घटना की सूचना मिलने पर कोतुलपुर ग्रामीण अस्पताल से एक मेडिकल टीम विद्यालय पहुँची। कोतुलपुर ब्लॉक स्वास्थ्य केन्द्र के चिकित्सक पलाश

दास और मनोरोग विशेषज्ञ पृथा मुखोपाध्याय भी विद्यालय पहुँचे। भूतही बातों के चलते अस्वस्थ हुई छात्राओं की प्राथमिक चिकित्सा की गई। जबकि चिंताजनक अवस्था में कई छात्राओं को उपचार के लिए कोतुलपुर ग्रामीण अस्पताल में भर्ती कराया गया।

मनोरोग विशेषज्ञ पृथा मुखोपाध्याय ने कहा, ''ज्यादातर छात्राएँ खाली पेट या थोड़ा कुछ खा-पीकर विद्यालय आया करती हैं। जिसके कारण ये छात्राएँ शारीरिक रूप से दुर्बल होती हैं। ऐसी ही छात्राएँ भूत की मनघड़ंत बातों के कारण विद्यालय में ही मानसिक रूप से अस्वस्थ हो गई।''

इस विद्यालय में छात्र-छात्राओं की संख्या लगभग ८०० है। ये छात्र-छात्राएँ विद्यालय के आस-पास रायबागिनी, झोड़ा, मुराहाट, हजारपुकुर, जलजला, हरिहरचाका, हेयाबनी गाँवों के अधिकांश निर्धन परिवारों से हैं। इनमें से अधिकतर छात्र-छात्राएँ अपने घरों से प्रातः चूड़ा व मूड़ी खाकर विद्यालय आते हैं और दोपहर को राज्य सरकार की मध्याह्न भोजन योजना के अधीन मिलने वाले भोजन से किसी तरह से पेट भरा करते हैं। विद्यालय में ऐसी कई छात्राएँ हैं जो शारीरिक रूप से अस्वस्थ भी है, इनका विभिन्न अस्पतालों में नियमित रूप से उपचार भी चल रहा है।

मिर्जापुर उ.मा. वि. के शौचालय में भूत है! इस वजह से विद्यालय और इसके आसपास के इलाके में भूतहा आतंक सामूहिक हिस्टीरिया की तरह फैल गया। अभिभावकों ने अपने बेटा-बेटियों को विद्यालय जाने से रोक दिया। विद्यालय में पढाई लिखाई खटाई में पड़ गई। शाम ढलने के बाद विद्यालय से विचित्र-सी डरावनी ध्वनियाँ आने की भी बात कानों-कान सुनाई पड़ने लगी।

विद्यालय के आस-पास गाँव में रहने वाले लोग कहने लगे, '' जब ओझा ने पहले ही कहा था कि विद्यालय को बचाने के लिए विद्यालय में तंत्र-मंत्र या झाड़-फूँक करने में क्या आपत्ति है। अगर समय रहते अतृप्त आत्माओं को विद्यालय से मुक्त नहीं किया गया तो कोई बड़ा संकट आने का डर है।''

विद्यालय के शौचालय में भूत दिखाई देने के बाद से उत्पन्न हुई परिस्थिति से जहाँ विद्यालय प्रशासन चिंता में पड़ गया। इस समस्या से शीघ्र विद्यालय को मुक्त करने के लिए विद्यालय के कार्यवाहक प्रधान शिक्षक महानंद कुंडू और स्थानीय प्रशासन ने शिक्षकों और प्रशासनिक अधिकारियों के साथ आपात बैठक की। बैठक में काफी विचार विमर्श के बाद फैसला लिया गया कि विद्यालय में पैदा हुई भूतह समस्या के समाधान करने के लिए भारतीय विज्ञान व युक्तिवादी समिति के कार्यकर्ताओं को विद्यालय में बुलाया जाएगा। इसी अनुसार विद्यालय की ओर से युक्तिवादी समिति के अध्यक्ष प्रवीर घोष से संपर्क किया गया।

एक पत्रकार के रूप में मैंने प्रबीर जी से संपर्क किया और उन्हें विद्यालय में फैली भूतही मिथ्यावादों के समाधान के लिए आगे क्या करना चाहिए, इस पर विस्तार से बातें की।

प्रबीर जी ने कहा, ''युक्तिवादी समिति की बाँकुड़ा जिला शाखा के रामकृष्ण चंद्र समेत कई कार्यकर्ताओं को मिर्जापुर उ.मा.वि. का दौरा करने का निर्देश दिया गया है।''

बाँकुड़ा से युक्तिवादी समिति की ओर से एक दल कोतुलपुर में स्थित मिर्जापुर शाला पर पहुँचा। दल में सम्मिलित कार्यकर्ताओं ने विद्यालय के

शौचालय सहित पूरे विद्यालय का निरीक्षण किया। साथ ही भूत देखने वाली छात्राओं, उनके अभिभावकों, विद्यालय के शिक्षकों और आसपास गाँव के लोगों से बातें की।

इसके बाद समिति की ओर से विद्यालय परिसर में एक मंच बनाकर अंधविश्वास विरोधी 'अलौकिक नहीं, लौकिक' कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम मंच पर विद्यालय के प्रधान शिक्षक, शिक्षकगण, कोतुलपुर थाना प्रभारी, कोतुलपुर के बीडीओ गौतम बाग, मिर्जापुर ग्राम पंचायत की प्रधान नमिता पाल और सर्व शिक्षा अभियान के अधिकारी, हजारों की संख्या में विद्यालय के छात्र-छात्राएँ और आसपास के गाँवों के अनेक लोग भी उपस्थित हुए।

कार्यक्रम मंच पर एक मेज पर दूध से भरा हुआ काँच का एक गिलास और एक इंसानी खोपड़ी रखते हुए एक तर्कवादी कार्यकर्ता ने कहा, ''हमें सुनने को मिला है कि यह विद्यालय भूतों का डेरा बन गया है। यदि वहाँ वास्तव में भूत है तो हम किसी एक भूत को इस मंच पर बुला कर उसे दूध पिलाएँगे।''

अपने बाँये हाथ में इंसानी खोपड़ी को लेकर कुछ देर तक तंत्र-मंत्र का कोई मंत्र पढ़ा। इसके बाद दूध से भरा हुआ गिलास खोपड़ी के सामने लाया गया।

आश्चर्य! गिलास का दूध धीरे-धीरे कम होता गया। देखने से ऐसा लगा कि खोपड़ी में घुसा हुआ भूत ने दूध पी लिया हो।

इसके बाद एक कार्यकर्ता ने कपूर का एक छोटा-सा टुकड़ा टेबल पर रखा। उसे माचिस की एक तीली से जला दिया। फिर जलता हुआ उस टुकड़े को अपनी हथेली पर रख लिया। इसके बाद जलता हुआ कपूर को अपनी जीभ पर रखा और आग को खा गया।

एक अन्य कार्यकर्ता ने मुँह से एक घड़ा उठा कर दिखाया।

इसी क्रम में बिना माचिस के ही एक यज्ञ कुंड में आग लगा कर दिखाया गया। एक के बाद एक 'चमत्कारी' कारनामें देख उपस्थित छात्र-छात्राएँ और लोग तालियाँ बजाने लगे।

दर्शकों से पूछा गया, ''आप में से कोई यह बता सकता है कि गिलास का दूध कौन पी गया?''

भीड़ में बैठे हुए एक छात्र ने कहा, ''शौचालय में छिपा हुआ भूत आकर दूध पी गया।''

एक छात्रा ने कहा, ''शायद आप लोग कोई जादूगर हो। आप लोगों के पास तंत्र मंत्र या भूत-प्रेत की शक्ति नहीं हैं। भूत-प्रेम सिर्फ और सिर्फ एक कल्पना और अंधविश्वास मात्र है।''

कार्यक्रम देख रही एक छात्रा ने कहा, ''विद्यालय के शौचालय में भूत है। शौचालय में उस भूत को देखकर पहले शम्पा और फिर कई छात्राएँ अस्वस्थ हो गई थीं। गाँव के ओझा दंपति ने भी विद्यालय में भूत होने की बात कहीं है।''

इस पर कार्यकर्ताओं ने विद्यालय के शौचालय में भूत देखने वाली छात्रा शम्पा को कार्यक्रम मंच पर बुलाया।

तर्कवादियों ने पूछा, ''आपने अपनी आँखों से भूत देखा था? क्या आपको लगता है कि वास्तव में भूत-प्रेत हैं?''

छात्रा ने कहा, ''हाँ मैंने अपनी आँखों से भूत को देखा था।''

''तब तो उस भूत की स्मार्ट फोन से फोटो खींची जा सकती है?''

यह सुन वो इधर-उधर देखने लगी और अन्य छात्राएँ मुस्कुराने लगीं। तर्कवादी ने समझाया, ''धार्मिक मान्यताओं के अनुसार आत्मा का अर्थ, चेतना, चैतन्य या मन है। आज आधुनिक विज्ञान ने साबित किया है कि मस्तिष्क की स्नायु कोशिकाओं की क्रिया-प्रतिक्रिया का फल ही मन या चिंता है। मस्तिष्क की कोशिकाओं के बिना चिंता, मन या आत्मा का अस्तित्व असंभव है।''

''शरीर की मौत के साथ ही मस्तिष्क की कोशिकाओं का भी अंत हो जाता है। ऐसे में इन कोशिकाओं की क्रिया-प्रतिक्रिया भी बंद हो जाती है। यानी मन की भी मृत्यु हो जाती है। कुल मिलाकर शरीर नष्ट होने पर आत्मा विलीन हो जाती है। इसलिए अतृप्त आत्माओं या भूत-प्रेत का अस्तित्व ही नहीं होता है।''

एक छात्रा ने पूछा, ''यदि भूत-प्रेत नहीं है तो शम्पा

या अन्य छात्राओं को भूत क्यों दिखाई दिया?''

उत्तर में तर्कवादी ने कहा, ''हमारी दीदी–नानी हमें बचपन में भूत–प्रेत की कहानियाँ सुनाया करती हैं। ये कहानियाँ हमारे बचपन के कच्चे मन मस्तिष्क में इस प्रकार बैठ जाती हैं कि जब हम पढ़–लिखकर बड़े हो जाते हैं तो भी बचपन में सुनी हुईं भूत–प्रेत की काल्पनिक कहानियाँ सच्ची लगने लगती हैं। इसके अलावा विभिन्न टीवी चैनलों पर भूत–प्रेत पर आधारित धारावाहिकों का प्रसारण किया जाता है। इन धारावाहिकों का बच्चों के मन–मस्तिष्क पर अन्धविश्वास का पूर्ण प्रभाव पड़ता है।''

चंद्र ने कहा, ''भूत–प्रेत पर विश्वास करने के कारण शम्पा जब शौचालय में गई तो उसे भूत जैसी किसी वस्तु का भ्रम हुआ। भ्रम के कारण उसे भूत जैसा कुछ दिखाई दिया होगा लेकिन जब उसे ओझा के पास ले जाया गया तो ओझा ने भूत होने का दावा किया और छात्रा के उपचार के नाम पर झाड़–फूँक की। ओझा के कहने पर शम्पा ने जब विद्यालय के शौचालय में भूत होने की बात कहीं तो वह मिथ्यावाद की तरह अन्य छात्राओं में फैल गई। इसके बाद से जब भी कोई छात्रा शौचालय से लौटती है तो वह भूत–भूत कहकर अचेत हो जाती है। नतीजा, विद्यालय में भूत होने की बात सामूहिक हिस्टीरिया की तरह फैल गई। हिस्टीरिया की काउंसलिंग द्वारा चिकित्सा संभव है।''

''भूत–प्रेत देखना सिर्फ व्यक्तिगत अनुभव या इन्द्रियजनित भ्रम के अलावा कुछ नहीं है। जब हमारी इन्द्रियाँ भ्रम की अवस्था में होती है तब ऐसी घटनाएँ व्यक्ति अनुभव करता है। भूत शौचालय में नहीं बल्कि मन–मस्तिष्क में अंधविश्वास के रूप में बसा हुआ है।''

तर्कवादी ने आगे कहा, ''विद्यालय में भूत की कपोलकल्पित बातों के कारण अस्वस्थ हुई अधिकांश छात्राएँ ग्रामीण क्षेत्रों में रहा करती हैं। ये छात्राएँ अधिकतर निर्धन किसान परिवार से भी हैं। कुछ लड़कियाँ शारीरिक कमजोरी, कुपोषणग्रस्त भी होती है। उनमें स्वास्थ्य आदि की जागरूकता की भी कमी होती है। ये लोग भूत–प्रेत, झाड़फूंक, ओझा आदि पर विश्वास करते हैं। ऐसी स्थिति में जब कोई लड़की ऐसे कोई हावभाव करती है जिसका वैज्ञानिक कारण पता नहीं होने के कारण उनके माता–पिता उन्हें उपचार के लिए ओझा के पास ले जाते हैं।

मानसिक तनाव मस्तिष्क पर दबाव आदि कारणों से लोग प्रायः मानसिक बीमारियों की चपेट में आ जाते हैं जिन्हें वह भूत–प्रेत अथवा जादू टोने का प्रभाव समझ बैठते हैं। मनोरोग को भूत–प्रेत का साया मानकर झाड़–फूँक के चक्कर में पड़ जाते हैं। मनोरोग भी दूसरी शारीरिक बीमारियों की तरह ही होता है, जिसका उचित काउंसलिंग और औषधि के माध्यम से सरलता से उपचार किया जा सकता है।''

युक्तिवादी समिति के कार्यकर्ताओं ने कहा, '' अब यदि कोई दावा करता है कि विद्यालय में भूत है तो भूत दिखाने वाले को ५० लाख रुपए की चुनौती देता हूँ।''

अंधविश्वास से मुक्त होने के लिए वैज्ञानिक सोच को अपनाने का परामर्श देते हुए तर्कवादी कार्यकर्ताओं ने कहा, ''किसी भी रोग का उपचार सरकारी अस्पताल में, डॉक्टर के हाथों करवाना चाहिए। यदि किसी पर भूत बाधा होने जैसी समस्या हो तो उसका ओझा के हाथों झाड़–फूँक करवाने के बजाय मनोचिकित्सक के पास ले जाए। मनोचिकित्सा से आप संपूर्ण रूप से स्वस्थ हो जाएंगे।''

आगे यह भी बताया गया, भारतीय कानून में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि ताबीज, कवच, ग्रह–रत्न, तंत्र–मंत्र, झाड़–फूँक, चमत्कार, दैवी औषधि आदि द्वारा किसी भी समस्या या बीमारी से छुटकारा दिलवाने का दावा तक करना अपराध है। तंत्र–मंत्र, चमत्कार के नाम पर आम जनता को लूटने वाले ओझा, तांत्रिक जैसे पाखंडियों को कानून की सहायता से जेल की हवा तक खिलाई जा सकती है।

''ड्रग एंड कॉस्मेटिक एक्ट, १९४० के तहत किसी भी बीमारी से छुटकारा दिलवाने के नाम पर दिए जाने वाले ताबीज, कवच, झाड़–फूँक, मंत्र युक्त जल, तंत्र–मंत्र आदि औषध के रूप में अस्वीकार होंगे। बिना लाइसेंस के ताबीज, कवच इत्यादि द्वारा बीमारी से छुटकारा नहीं मिलाने पर या मरीज की मृत्यु होने पर भारतीय दंड संहिता की धारा एस ३२० के अन्तर्गत दोषी को सजा होगी। इस कानून का उल्लंघन करने वाले को १० वर्ष से लेकर

आजीवन कारावास हो सकती है। साथ ही १० लाख रुपये तक का अर्थदण्ड होगा।''

''इसके अतिरिक्त भी, ड्रग्स एंड मैजिक रेमेडीज (आबजेक्शनबल एडवर्टाइजमेंट) एक्ट, १९५४ के तहत तंत्र-मंत्र, गंडे, ताबीज आदि तरीकों के उपयोग चमत्कारिक रूप में बीमारियों के उपचार या निदान आदि दण्डनीय अपराध हैं।''

अंधविश्वास विरोधी कार्यक्रम देखने के बाद छात्राओं ने कहा, ''ओझा दंपति के कहने पर हमारे मन में भूत-प्रेत को लेकर जो डर उत्पन्न हुआ था वह दूर हो गया है। अब आगे से यदि ऐसी भूतही घटना होती है तो हम उस पर ध्यान ही नहीं देंगे। यदि कोई छात्र या छात्रा भूत के नाम पर अस्वस्थ हो जाता है तो उसे उपचार के लिए डॉक्टर के पास ले जाया जाएगा। भूत-प्रेत के नाम पर किसी भी भ्रमपूर्ण बातों पर अब ध्यान नहीं देंगे।''

मंच पर अपने हाथ में माइक थाम कर उपस्थित छात्र-छात्राओं के उद्देश्य से कोतुलपुर के बीडीओ गौतमबाग ने कहा, ''विज्ञान के इस युग में आज जहाँ लड़कियाँ भी चन्द्रमा पर पहुँच रही हैं। किक्रेट विश्वकप में महिला खिलाड़ी बाजी मार रही हैं लेकिन लज्जा की बात यह है कि ऐसी स्थिति में एक विद्यालय में भूतही भ्रम को दूर करने के लिए अंधविश्वास विरोधी कार्यक्रम भी करना पड़ रहा है।''

''आप सभी को भूत-प्रेत जैसी किसी भी भ्रामक बात में कान नहीं देना चाहिए। यदि ऐसी बातें फैलती भी है तो आप लोगों को उसके पीछे तर्कपूर्ण कारण का पता लगाना होगा। तभी जाकर समस्या का समाधान करना संभव होगा।'' प्रधान शिक्षक महानंद कुंडू ने कहा, '' युक्तिवादी समिति के कार्यकर्ताओं ने विद्यालय में कार्यक्रम कर विशेष रूप से छात्राओं के मन में भूत का डर दूर किया है, इसके लिए उन्हें धन्यवाद देना चाहूँगा।''

बता दें, तर्कवादी कार्यकर्ताओं ने विद्यालय पहुँचने से पहले जब ओझा बाग दंपति से मुलाकात की थी तो ओझा ने बल देते हुए कहा था उसने ही छात्रा पर से भूत भगाने की लिए झाड़-फूँक की। विद्यालय में भूतहा मिथ्यावाद फैलाने के पीछे ओझा का धंधा जुड़ा हुआ था। ओझा चाहता था कि विद्यालय में यदि भूत होने की बातों के कारण छात्र या छात्रा अस्वस्थ हो जाती है तो उन्हें उपचार के लिए उनके पास ले जाया जाएगा। उन्हें झाड़-फूँक करने और ताबीज-कवच आदि देने के बदले में उनके परिजनों से पैसा भी लूटा जाएगा लेकिन युक्तिवादी समिति के कार्यकर्ताओं ने विद्यालय परिसर में अंधविश्वास विरोधी कार्यक्रम कर ओझा दंपति की सारी पोल खोल कर रख दी।

युक्तिवादी समिति की ओर से प्रधान शिक्षक महानंद कुंडू को सुझाव दिया गया, ''विद्यालय में भूत-प्रेत नाम की कोई वस्तु नहीं है। किन्तु विद्यालय में भूत होने की झूठी कहानी फैलायी गई। ऐसी डरावनी कहानी फैलाने वाले ओझा और अन्य लोगों के विरुद्ध थाने में सूचना दर्ज करें।''

तर्कवादियों के सुझाव के बाद विद्यालय प्रबंधन ने जिला प्रशासन को ओझा द्वारा फैलाई गई भूत की झूठ बातों के बारे में अवगत कराया गया। इसके बाद विद्यालय प्रबंधन की ओर से कोतुलपुर थाने में ओझा शिखा बाग और शीतल बाग के खिलाफ लिखित रूप से शिकायत लिखवाई गई। विद्यालय में शौचालय में भूत होने की जानबूझ कर छात्र-छात्राओं को आतंकित करने के आरोप में पुलिस ने आरोपी ओझा दंपति शीतल बाग और शिखा बाग को उनके घर से बंदी बना लिया। न्यायाधीश ने जहाँ से ओझा दंपति को जेल हिरासत में भेजने का आदेश दे दिया। अभियुक्त ओझा दंपति के खिलाफ धारा ४२० के अन्तर्गत धोखाधड़ी और ड्रग्स एंड मैजिक रेमेडीज (आपत्तिजनक विज्ञापन) एक्ट, १९५४ की धारा ७ के अन्तर्गत मामला दायर किया गया। पुलिस को जाँच में पता चला कि विद्यालय में भूत होने की अफवाह फैलाने के पीछे ओझा बाग दंपति ही मुख्य आरोपी हैं।

कई दिनों बाद...

विद्यालय के शौचालय में भूत की अफवाह फैलाने वाले ओझा दंपति की गिरफ्तारी के बाद विद्यालय में शिक्षण कार्य सामान्य हो गया। भूत के डर से मुक्त होकर छात्र-छात्राओं का विद्यालय में आना भी प्रारंभ हो गया।

● **जाफरपुर (पश्चिम बंगाल)**

देश विशेष

मिलते जुलते नामों के देश (३)

आलेख : श्रीधर बर्वे

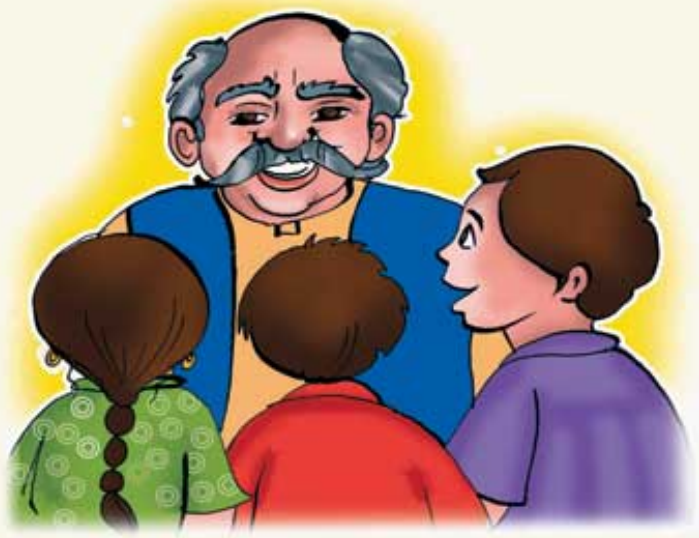

(गतांक से आगे)

दादाजी– जैसे हमारे देश में कोरिया नाम एक जिला तथा इसी नाम के दो देश हैं, भारत में कोरिया जिले का मुख्यालय वैकुण्ठपुर है। स्वतंत्रता के पूर्व कोरिया नामक एक छोटी सी देशी रियासत हुआ करती थी। यह जिला छतीसगढ़ राज्य के सीमान्त पर स्थित है। इस सीमान्त पर उत्तरप्रदेश तथा झारखण्ड की सीमाएं हैं।''

जापान सागर और पूर्वी चीन सागर के मध्य कोरिया प्रायद्वीप एशिया की मुख्य भूमि से लटका हुआ प्रतीत होता है। इस प्रायद्वीप में दो देश उत्तरी कोरिया तथा दक्षिणी कोरिया स्थित हैं। सन् ६६८ तक इस प्रायद्वीप में तीन राजाओं के राज्य थे, इनमें सबसे बड़ा राज्य कोगुर्यो था। इतिहासज्ञ मानते हैं कि इस राज्य की स्थापना ईसा के जन्म के दो शताब्दियों पहले हुई थी। कोगुर्यो राज्य के क्षेत्र में कोरिया के अलावा मंचूरियन का बड़ा भाग भी शामिल था। कालान्तर में चीन के तांग वंश के राज्य काल में कोगुर्यो राज्य का पतन हो गया। माना जाता है कि कोरिया शब्द का निर्माण कोगुर्यो से हुआ।

वैसे ही एशिया में कॉकेशस पर्वत की गोद में जॉर्जिया नामक देश बसा हुआ है जिसकी राजधानी तिबलिसी शहर में है। और जॉर्जिया नाम का एक राज्य भी है जो संयुक्त राज्य अमेरिका का एक घटक राज्य है तथा अटलाण्टा शहर उसकी राजधानी।

बच्चे– दादाजी क्या कुछ और भी ऐसे देश हैं जिनके एक समान नाम हों?

दादाजी– एक जैसे नाम तो नहीं, परन्तु उनके नामों को ध्यानपूर्वक नहीं सुना जाये तो हम गलतफहमी के शिकार हो सकते हैं।

अनंता– यह कैसे हो सकता है?

दादाजी– देखो वेस्टइण्डीज का नाम तो जानते ही हो। वहाँ डोमेनिका नामक एक छोटा सा सुन्दर द्वीप देश है। पर्यटन के लिए विख्यात इस द्वीप की राजधानी रोसो नामक नगर है। इसी द्वीप के पड़ोस में हिस्पेनिओला नामक द्वीप है जो इस क्षेत्र में क्यूबा के बाद दूसरा बड़ा द्वीप है। हिस्पेनिओला द्वीप दो पृथक स्वतंत्र देशों में विभाजित है। ये देश हैं– हैटी और डोमिनिकन रिपब्लिक। पश्चिमी भाग हैटी और पूर्वी भाग है डोमिनिकन रिपब्लिक जिसकी राजधानी सैन्तो दोमिंगो शहर में है।

यदि सावधान न रहे तो हमें ऑस्ट्रिया और ऑस्ट्रेलिया के सम्बन्ध में भ्रम हो सकता है। ऑस्ट्रिया योरोप के मध्य में स्थित ११५६ से एक स्वतंत्र देश है। जबकि ऑस्ट्रेलिया विश्व का सबसे छोटा महाद्वीप है। यही एक ऐसा महाद्वीप है जिसमें केवल एक ही देश है जबकि अन्य महाद्वीपों में कई–कई देश हैं।

● इन्दौर (म.प्र.)

(शेष अगले अंक में)

बराबर वालों का साथ

चित्रकथा : देवांशु वत्स

।। भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता में पुरस्कृत ।।

समझदार झल्लू

बाल प्रस्तुति : कंचन जोशी

किसी गाँव में कल्लू जी अपने परिवार सहित रहते थे। कल्लू जी बहुत गरीब थे और मेहनत मजदूरी करके दो समय का खाना भी मुश्किल से जुटा पाते थे। उनके पास एक कुत्ता था। उसका नाम झल्लू था। झल्लू बहुत वफादार था।

एक दिन कल्लू जी काम की तलाश में घर से निकले। उनका कुत्ता झल्लू भी उनके साथ चल दिया। एक जगह लोग बंजर भूमि में खुदाई करके पेड़ लगा रहे थे। कल्लू जी ने सोचा! क्यों न आज यहीं पर काम माँगकर काम किया जाए। वे काम करने वाले लोगों से पूछने लगे। तभी एक मजदूर ने बताया कि सामने ठेकेदार से मालूम कर लो।

कल्लू जी ठेकेदार के पास गए और काम के लिए पूछा। ठेकेदार ने खेत के दूसरे कोने से खुदाई का काम दे दिया।

कल्लू जी खेत के दूसरे कोने में जाकर खुदाई करने लगे। उनका कुत्ता भी वहीं पर बैठ कर उनको देखता रहा। वह कल्लू जी की मदद करना चाहता था, पर क्या कर पाता? कभी उनके दाईं और आता तो कभी बाईं ओर।

सूरज के चढ़ने के साथ ही गर्मी बढ़ने लगी। कल्लू जी पसीने से लथ-पथ हो गए, किन्तु काम नहीं छोड़ा। बेचारा झल्लू भी गर्मी से हाँफने लगा। उसे बहुत प्यास लगी थी। जब प्यास सहन नहीं हुई तो, झल्लू पानी की तलाश में काफी दूर चला गया।

काफी दूर जाकर झल्लू को एक तालाब नजर आया। वहाँ कुछ लोग नहा रहे थे। झल्लू ने तालाब के किनारे से पानी पिया और वह वहीं बैठ गया। लोग स्नान करने के बाद भोजन करने लगे। तभी गरज के साथ छींटे पड़ने लगे। लोग जल्दी-जल्दी सामान समेटकर जाने लगे। झल्लू उन्हें देख रहा था।

जब लोग चले गये तो झल्लू उस तरफ गया, जहाँ वे लोग बैठे थे। तालाब से कुछ दूरी पर एक पेड़ था। झल्लू उस पेड़ के नीचे गया। वहाँ पर एक बैग रखा था। झल्लू बैग को सूंघकर उस तरफ को भौंकता हुआ दौड़ा, जिस तरफ वे लोग जा रहे थे। शायद वह उन्हें बेग के बारे में बताना चाहता था।

तेजी से दौड़ता हुआ झल्लू उन तक पहुँच गया। किन्तु उनमें से एक व्यक्ति ने झल्लू की ओर पत्थर फेंका। झल्लू खड़ा होकर भौंकने लगा। किन्तु वे आगे खड़ी अपनी कार में बैठकर चले गए।

झल्लू दौड़ता हुआ वापस पेड़ के पास आया। बैग वहीं पर पड़ा था। उसने बैग अपने मुँह में दबाया और उस ओर चल दिया जहाँ कल्लू जी खुदाई कर रहे थे। किन्तु वहाँ पर कल्लू जी को न देखकर झल्लू घर की ओर चल दिया।

घर जाकर झल्लू ने बैग कल्लू जी के पैरों में रख दिया। कल्लू जी ने बैग खोलकर देखा तो हैरान हो गए। इतने रुपए तो उन्होंने कभी देखे ही नहीं थे। वे सोचने लगे कि झल्लू यह बैग कहाँ से लाया होगा और यह रुपये किसके होंगे? वे काफी परेशान हो गए। तभी उनकी पत्नी ने पूछा, क्या बात है? आप कुछ परेशान दिख रहे हैं?

कल्लू जी ने बीवी को झल्लू का लाया बैग दिखाया। बैग में रुपये देखकर उनकी पत्नी भी आश्चर्य में पड़ गई। तभी उनकी बेटी लाजवंती आई। लाजवंती छटी कक्षा में पढ़ती थी। लाजवंती ने भी बैग देखा। सभी आश्चर्य में पड़ गए। सोचने लगे जिस आदमी का यह बैग होगा वह कितना परेशान होगा।

लाजवंती ने बैग की जेब में देखा और कुछ पर्चियाँ बाहर निकाली और उनको पढ़ने लगी। एक पर्ची में बैग वाले का नाम व पता लिखा था। उसने अपने बाबूजी को बताया कि जिस व्यक्ति का यह बैग है, उसका नाम और पता इस पर्ची में लिखा है। कल्लू जी ने निश्चय किया कि वे इस बैग को लौटाकर ही रहेंगे।

दूसरे दिन सुबह होते ही कल्लू जी पूछते–पूछते उस पते तक पहुँच गए। उनका कुत्ता भी उनके साथ था। दरवाजे पर दरबान खड़ा था। कल्लू जी अपना नाम बताकर मालिक से मिलने की बात कह ही रहे थे कि, अंदर से मालिक आ गए ओर पूछने लगे कि कौन हैं? आप किस काम से आए हो?

कल्लू जी ने उनको बैग लौटाते हुए कहा, आपका बैग कहीं गिर गया था। इसे मेरा कुत्ता मेरे पास ले आया। सेठ जी ने बैग खोलकर देखा तो सारा सामान वैसे ही था।

कल्लू जी की ईमानदारी देखकर सेठ जी बहुत प्रसन्न हुए और बोले मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूँ? कल्लू जी ने अपना सारा हाल सेठ जी को सुना दिया।

सेठ जी की एक मिल थी। उन्होंने कल्लू जी से कहा, ''अगर आप मेरी मिल में नौकरी करना पसंद करेंगे तो मुझे अच्छा लगेगा। आपके रहने के लिए आपको कमरा मिलेगा। साथ ही मिल के आहाते में कुछ खाली जमीन है। आप उसमें खेती भी कर सकते हैं।''

कल्लू जी बहुत खुश हुए और उन्होंने नौकरी के लिए हामी भर दी। सेठ जी भी ईमानदार आदमी को पाकर खुश हुए।

कुछ समय बाद कल्लू जी मिल में आकर रहने लगे। अब वे प्रसन्न थे और उन्हें कोई परेशानी नहीं थी। उन्होंने लाजवंती को भी अच्छे विद्यालय में भर्ती करा दिया। कल्लू जी जानते थे कि यह काम लाजवंती की शिक्षा और झल्लू के कारण ही मिला है।

• नरतोला (उत्तराखण्ड)

तारों की दुनिया

कविता : श्रवण कुमार सेठ

आसमान में लाखों तारे
कितने सुन्दर कितने प्यारे।
टिमटिम-टिमटिम चमक रहे हैं
फूलों जैसे महक रहे हैं।।

कितनी रोचक बात है बच्चो!
सूरज भी एक तारा है।
उसने ही धरती पर मेरे
फैलाया उजियारा है।

आओ कहानियाँ तारों की
बच्चो! तुम्हें सुनाता हूँ।
धरती से भी हैं विशाल
राज आज बतलाता हूँ।

बच्चो! प्रकाश वर्ष मापता
आकाशीय पिण्डों की दूरी।
अन्तरिक्ष का ज्ञान तुम्हें,
है रखना बहुत जरूरी।

करोड़ों प्रकाश वर्ष दूर
हमसे हैं ये तारे।
इसीलिए टिमटिम-टिमटिम
करते दिखते सारे।।

केन्द्र में इनके एक प्रक्रिया
चलती रहती हरदम,
नाभिकीय संलयन को जानो
कर लो दूर सभी भ्रम।

तारों में सूरज काका
हैं धरती के सबसे पास।
ऊर्जा के वह स्रोत महान
है जीवन उनका प्रकाश।।

- लखनऊ (उ.प्र.)

गोलू और पानी में मस्ती

कहानी : डॉ. विनीता राहुरिकर

गोलू बड़ा प्यारा अपने नाम के ही अनुरूप गोलमटोल नन्हा हाथी था। वह आनंद वन में अपने माता–पिता और अन्य सम्बधियों के साथ बड़े सुख से रहता था। जंगल में सभी उसे बहुत स्नेह करते थे। वह था भी बहुत प्यारा और सबका दुलारा। सबसे बहुत प्यार करता, सबका कहना मानता। सबसे मिलजुल कर रहता। सब उससे बहुत प्रसन्न थे। अपनी माँ का तो वह आँखों का तारा था।

गोलू भी अपनी माँ से बहुत प्यार करता, माँ की हर बात मानता, बस एक ही आदत थी गोलू की जिसके कारण से उसकी माँ उससे परेशान रहती थी वो कि गोलू कभी नहाता ही नहीं था। उसे पानी से बहुत डर लगता था। उसे लगता कि अगर वह पानी में गया तो घुल जाएगा।

माँ उसे खूब समझाती कि ऐसे पानी में नहाने से कोई घुल नहीं जाता। सब तो नहाते हैं लेकिन गोलू का डर दूर नहीं होता।

इस वर्ष गर्मी बड़ी तेज पड़ी। आनन्द वन के प्राणी भी गर्मी के कारण त्रस्त हो गए। सभी पशु–पक्षियों का बुरा हाल था।

राजा शेर ने आनंदवन में घने पेड़ों की छांह में सुन्दर तरणताल (स्विमिंग पूल) बनवा दिया ताकि सभी प्राणी उसमें नहाकर गर्मी से थोड़ी राहत पा सके।

जंगल के सभी प्राणी स्विमिंग पूल देखकर बहुत प्रसन्न हुए। सभी अपने काम निपटाकर पूल पर आते और घण्टों पानी में खेलते। पेड़ों की ठंडी छाँव में आराम करते।

गोलू के माता–पिता भी रोज वहाँ आते और पानी में तैरते रहते। माँ गोलू को भी खूब बुलाती, बाकी सभी भी उसे आवाज लगाते– ''अरे आओ न गोलू देखो पानी कितना ठंडा है। सारी गर्मी दूर हो जाएगी '' चीनू चीता कहता।

''हाँ गोलू! तुम भी आओ सबके साथ तैरो। देखो कितना आनंद आ रहा है।'' बीनू भालू और हीरू हिरण भी बुलाते।

''नहीं–नहीं। मुझे तो पानी से डर लगता है। मैं नहीं आऊँगा। मैं तो यही ठीक हूँ। यहाँ भी तो कितना ठंडा है।'' कहकर गोलू पेड़ों के पीछे दुबक जाता।

माँ उसे समझाती– ''बेटा! नहीं नहाओगे तो गर्मी में घमोरियां हो जाएंगी तुम्हे और सब गन्दा बच्चा बुलाएंगे।''

लेकिन गोलू पर कोई प्रभाव नहीं होता। वो तब भी पानी से डरता रहा।

एक दिन शाम को जब सब प्राणी स्विमिंग पूल में पानी से मस्ती कर रहे थे तब हमेशा की तरह गोलू पेड़ों की छाह में आ गया। वह पूल में खेल रहे अपने दोस्तों की तरफ देखता हुआ घास पर बैठने जा ही रहा था कि अचानक उसके पैर से तेज चुभन हुई। गोलू दर्द से कराह उठा। उसने पीछे देखा तो बुरी तरह डर गया। पीछे तेज नुकीले बड़े–बड़े काँटों वाला एक भयानक जीव था। दरअसल वह सीनू साही थी। सीनू घास पर आराम कर रही थी तभी गोलू का पैर उसके काँटों पर पड़ गया।

गोलू ने इसके पहले कभी साही नहीं देखी थी। वह सीनू को देखकर बहुत डर गया।

क्षमा करना बच्चे मैं आँखें बंद करके लेटी थी तो तुम्हे देख ही नहीं पाई। तुम्हें ज्यादा चोट तो नहीं आई न? ''सीनू अपनी बारीक सी आवाज में पूछते हुए गोलू की तरफ बढ़ी।

उसे अपने पास आता देखकर गोलू और डर गया कि यह तो मुझे मारने आ रही है। गोलू वहाँ से भागने लगा।

''अरे–अरे डरो नहीं, मैं तुम्हें कुछ नहीं करूँगी'' सीनू उसके पीछे भागी।

अब तो गोलू और भी डर गया। उसे कुछ नहीं सूझा तो वह भागते हुए सीधे स्विमिंग पूल में जा कूदा।

गोलू को पूल में देखकर हीरू, चीनू, बीनू सब बहुत खुश हुए।

''अरे वाह! आज तो गोलू भी आखिर पूल में आ ही गया'' सबने मिलकर गोलू पर पानी उछालना शुरु कर दिया।

पानी की वे ठंडी फुहारें गोलू को बड़ी अच्छी लगीं। उसने देखा कि वह पानी में घुला भी नहीं। गर्मी में ठंडा–ठंडा पानी बड़ा सुहाना लग रहा था। अब तो उसे भी खूब मजा आया। वह सूंड में पानी भरकर खूब नहाया। सबने मिलकर पानी में खूब मस्ती की।

शाम होने पर माँ ने उसे घर चलने को कहा तो गोलू बोला– ''अब तो तुम रोज नहाओगे न?'' माँ ने हँसते हुए पूछा।

''हाँ माँ अब तो मैं प्रतिदिन सुबह–शाम नहाऊँगा। मैं कोई मिट्टी का बना हुआ थोड़े ही हूँ कि पानी में घुल जाऊँगा। पानी तो कितना अच्छा होता है।'' गोलू ने छपाक् से पानी उड़ाकर कहा।

जब माँ को गोलू के पानी में उतरने का किस्सा पता चला तो सब खूब हँसे। माँ ने सीनू को धन्यवाद दिया कि उसकी वजह से गोलू का पानी का डर दूर हो गया।

अब गोलू प्रतिदिन पूल में अपने साथियों के साथ पानी में खूब मस्ती करता।

● भोपाल (म.प्र.)

सुंदर रंग भरो

● चाँद मो. घोसी

।। स्तंभ ।।

स्वयं बनें वैज्ञानिक

● आलेख : डॉ. राजीव तांबे ● अनुवाद : सुरेश कुलकर्णी

मित्रो! हमारा घर ही एक प्रयोगशाला है, आइए, छोटे छोटे प्रयोग आपको कैसे बनाते है वैज्ञानिक? खुद ही देखें!

नमक और काली मिर्च का चूर्ण एक हो गई हो तो उसे एक मिनिट में कैसे अलग करोगे?

लगने वाली सामग्री –

एक चम्मच नमक
एक चम्मच काली मिर्च चूर्ण
एक सफेद कागज
दो छोटी तश्तरी
प्लास्टिक की कंघी
ऊनी स्वेटर या ऊनी शॉल

इस प्रयोग की विधि में एक लड़का–लड़की ऐसी हो जिसके बालों में तेल न लगा हो अर्थात बाल तैलीय न हो।

तो अपना प्रयोग करते हैं शुरु, सब हो जायें तैयार इस प्रयोग के लिए–

सबसे पहले एक सफेद कागज, टेबल अथवा फर्श पर बिखराइये। उस पर एक चम्मच नमक और एक चम्मच काली मिर्च चूर्ण डाले। उसे अच्छी तरह से मिलाएं। अब कागज के पास दो तश्तरी रखें। जिनके बाल सूखे हैं उनके बालों में प्लास्टिक की कंघी जोर से घुमाये और कंघी को हमने जो मिश्रण एकत्रित किया है उसके पास लेकर जाना, इससे काली मिर्च चूर्ण के अंश अपने आप उछल कर कंघी के दाँतों पर एकत्रित होने लगेंगे। अब हमें कंघी को धीरे–धीरे एक तश्तरी के पास ले जाकर धीरे से तश्तरी को धक्का देकर वह काली मिर्च चूर्ण उस तश्तरी में जमा करना है।

अब प्लास्टिक की कंघी को ऊनी स्वेटर या ऊनी शॉल पर घिसकर वही प्रक्रिया फिर से करना है जब तक की काली मिर्च चूर्ण समाप्त न हो।

अब कागज पर क्या बचेगा? सिर्फ नमक।

वह कागज को समेटते हुए हम दूसरी तश्तरी में एकत्रित करते हैं।

है या नहीं नया प्रयोग बिना किसी प्रयोगशाला के?

यह क्यों होता है?

आइये आपकी इस जिज्ञासा का वैज्ञानिक कारण भी आपको बता देते हैं–

अगर हमने प्लास्टिक कंघी ऊन पर जोरों से घुमायी अथवा सूखे बालों पर जोर–जोर से घुमायी तो उस कंघी पर विद्युत तरंगे निर्मित होती है, और अगर इस कंघी में समभार का आकर्षण और विषम भार का अनाकर्षण अर्थात त्याग यह गुणधर्म विकसित होने से काली मिर्च चूर्ण का गुणधर्म गरम होने पर वह लेकर कंघी पर चिपक जाती है और विद्युत भार कम होने के उपरांत वह नीचे गिर जाती है।

हम अगर ऊनी स्वेटर पहने हैं और हमारा हाथ किसी अलमारी के हेण्डल पर लगता है तो हमें करंट या शॉक जैसे लगता है। यह सच है, कारण ऊनी स्वेटर पहनने से हमारे शरीर में विद्युत तरंगें निर्मित होती हैं और हमारा हाथ लोहे पर लगने से हमें करंट या शॉक लगता है।

अब कुछ आपके लिए–

हम इस तरह का प्रयोग जिसमें कंघी के विद्युत भार का उपयोग किस तरह कर सकते हैं? नमक और हल्दी का चूर्ण एकत्रित किया तो क्या होगा?

अगर प्लास्टिक की कंघी का उपयोग न किया तो अन्य कौनसी वस्तु का प्रयोग कर सकते हैं?

सोचो, और घर में ही विज्ञान के प्रयोग करो। कारण हमारा घर ही प्रथम पाठशाला होती है।

● पुणे (महा.)

।। हमारे राज्य वृक्ष ।।

महोगनी

डॉ. परशुराम शुक्ल

मणिपुर का राज्य वृक्ष

आस्ट्रेलिया और एशिया,
का यह वृक्ष निराला।
भारत भर में पाया जाता,
पौधा पतझड़ वाला।
तेज वृद्धि करके छै मीटर,
अपना रूप दिखाता।
आस्ट्रेलिया वाला पैंतिस,
मीटर तक हो जाता।
उगता अपने आप कहीं यह,
कहीं उगाया जाता।
आते ही मौसम बसंत का,
हरा-भरा हो जाता।
धवल गुलाबी फूलों से यह,
वन उपवन महकाता।
लाल रंग की लकड़ी देता,
लाल सेडार कहाता।
शीशम जैसी इसकी लकड़ी,
काम बहुत से आती।
अपने सुन्दर फर्नीचर से,
घर को खूब सजाती।

● भोपाल (म.प्र.)

छः अंगुल मुस्कान

• विष्णु प्रसाद चौहान

लड़की - तुम्हारा मोबाईल सुन्दर है। कितने का है?
लड़का- दौड़ में जीता है।
लड़की - कितने लोग थे दौड़ में?
लड़का - मोबाईल की दुकान का मालिक, तीन पुलिस वाले और मैं...

****

एक आदमी ने पूछा... भाई साहब! जूते कहाँ मिलेंगे?
मैंने कहा... हर जगह मिल सकते है। बस आप में वो गुण होने चाहिए।

छात्र - आचार्य जी! मुझे कुछ याद नहीं रहता।
आचार्य - अच्छा यह बताओ तुम कब पिटे थे।
छात्र - मंगलवार को।
आचार्य - यह कैसे याद रहा?
छात्र - मुझे प्रेक्टिकल में नहीं थ्योरी में प्रॉब्लम है।

****

बचपन में जब विद्यालय में शिक्षक के पास कॉपी जँचवाते और गुड दे दे तो हमें इतनी खुशी होती थी कि मानो शिक्षक ने अपनी जायदाद में से आधा हिस्सा दे दिया हो।

****

अभी हवाई जहाज रन वे पर दौड़ ही रहा था कि...
सोनू पायलट को थप्पड़ मार के बोला....मुझे देर हो रही है... और तुम बाय रोड़ जा रहे हो।

• ढबला खुर्द (म.प्र.)

आपकी पाती

देवपुत्र पत्रिका नियमित मिल रही है, हार्दिक धन्यवाद।

इसका जुलाई २०१९ अंक हाल ही मिला है। यह पत्रिका बच्चों के साथ ही सभी बड़ों के लिए भी अत्यंत रोचक, प्रेरक और प्रभावकारी है। इसमें प्रकाशित सभी कहानियां व अन्य रचनाएँ नई-नई जानकारी तो देती ही हैं साथ ही हमें नई ऊर्जा व शक्ति से भी भर देती हैं। सभी बच्चों के लिए यह एक अनिवार्य पत्रिका है, सभी पालकों को इसे मंगाना चाहिए। इससे उनका भावी जीवन संस्कारी होगा और हर क्षेत्र में उनका मार्गदर्शन करेगा। इसके सभी स्तम्भ सभी रचनाएं अत्यंत सशक्त और सार्थक हैं।

• राज केसरवानी, इन्दौर (म.प्र.)

आओ पता करें।

बच्चो! आपने यह अंक ध्यान से पढ़ा है तो बताओ निम्नांकित शब्द अंक की किस रचना में आए हैं?

दुर्गण, मंचूरियन, कुपोषणग्रस्त, कर्कश, शिल्पी, चौपालों, मोपेड, बिछौने,अंगीठी, हिडिम्बा।

।। जयंती २४ सितम्बर ।।

अमृतसर के निर्माता गुरु रामदास जी

''रामदास के सिर पर मिट्टी-गारे की टोकरी नहीं बल्कि दीन-दुनिया का छत्र है।'' गुरु अमरदास जी ने मुस्कराते हुए कहा। गोइंदवाल में सिख पंथ के गुरु अमरदास जी द्वारा एक बावड़ी का निर्माण कार्य चल रहा था। जेठा जी गुरुसेवा के लिए श्री अमरदास जी के सान्निध्य में आए थे लेकिन गुरुजी ने उनका अपनी पुत्री से विवाह कर उन्हें अपना दामाद भी बना लिया था। बावड़ी के निर्माण हेतु श्री जेठा जी सिर पर मिट्टी ढो रहे थे। उनकी यह सेवा रात दिन चल रही थी। यही बात जेठा जी के गाँव के कुछ लोगों को नहीं भायी, वे ससुराल में सिर पर मिट्टी ढोने को अपमानजनक मानते रहे थे। उनका यही उलाहना गुरुजी के कानों तक पहुँचा तो गुरुजी ने उक्त बात कही।

यही जेठा जी बाद में रामदास कहलाए और श्री गुरु अमरदास जी ने उन्हे १ सितम्बर १५७४ को अपनी गुरुपरम्परा का दायित्व सौंप कर स्वयं शीश झुकाया और कहा - ''आप मेरे रूप है, श्री गुरु नानक की ज्योति आप में विद्यमान है।'' और श्री गुरुराम दास सिख पंथ के चौथे गुरु साहिब बने।

श्री गुरु रामदास जी ने ही अमृतसर नगर की नींव रखी। श्री गुरुनानक देव जी के ''किरत्त करो'' (यानि श्रम की कमाई करो) के उपदेश के अनुसार मुफ्तखोरी और पराधीनता से मुक्त समाज की रचना करना चाहते थे। इसीलिए उन्होंने अलग-अलग स्थानों से बावन जातियों के विशेष कार्यों में निपुण लोगों को प्रेरित कर अमृतसर में 'गुरुबाजार' सजाया जो आज भी विद्यमान है।

सन १५७४ में अमृतसर स्थित अमृत सरोवर का निर्माण आपकी ही प्रेरणा से आरंभ हुआ जो १५८९ में पूरा हुआ तथा इसके बीच श्री हरिमंदिर साहिब की स्थापना का उनका संकल्प ही पांचवें गुरु अर्जनदेव जी द्वारा सम्पन्न हुआ।

श्री गुरुदास जी अनेक शास्त्रीय रागों में ईश्वरीय वाणी की रचना की। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में आपके ६७९ शब्द संकलित है।

१ सितम्बर,१५८१ को अपने सुयोग्य पुत्र श्री अर्जनदेव जी को गुरुगद्दी सौंप कर उसी दिन आपने देह त्याग दी।

श्रम के महत्व को स्थापित कर कौशल विकास के क्षेत्र में इन आध्यात्मिक महापुरुष का योगदान चिरस्मरणीय एवं अत्यंत प्रेरक है। •

भूल सुधार - हमारे राज्यवृक्ष स्तंभ में त्रुटिवश 'नीम' के स्थान पर सिक्किम के राज्यवृक्ष का विवरण छप गया है। कृपया सुधार कर पढ़े।

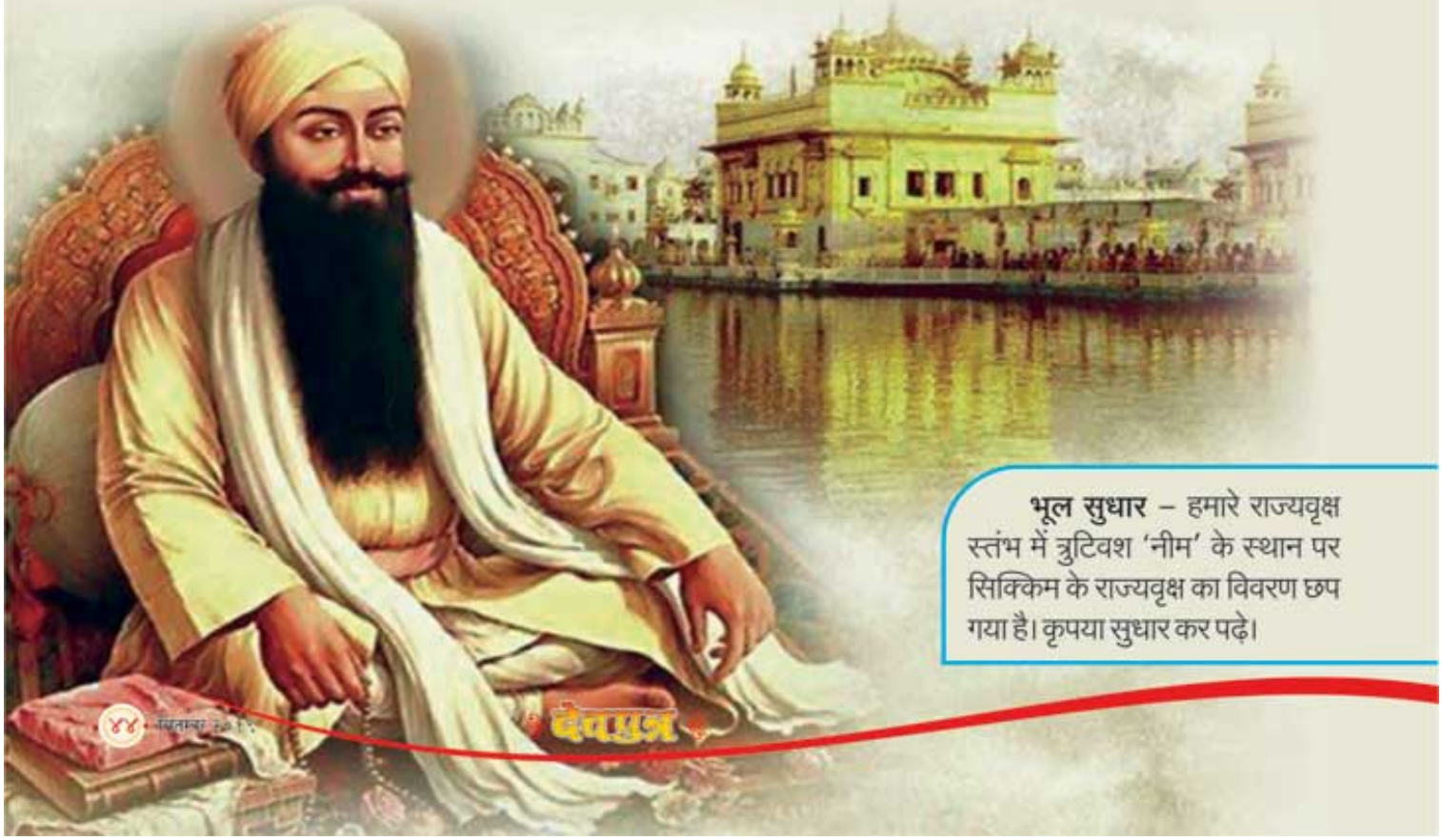

पुस्तक परिचय

प्रसिद्ध बाल साहित्यकार **श्री मुरलीधर वैष्णव** की **रायल पब्लिकेशन** १८ शक्ति कालोनी, गली नं. २ लोको शेड रोड़, रातानाड़ा, जोधपुर (राज.) ३४२००१ द्वारा प्रकाशित बाल साहित्य की दो सुन्दर कृतियाँ

चींटी का उपकार
(बाल गीत संग्रह)

मूल्य ८०/-
पृष्ठ ५६

बाल सुलभ कल्पनाओं एवं आनंद से ओतप्रोत २७ रोचक, बोधक, मनोरंजक बाल कविताएं।

जल और कमल
(बाल कथा संग्रह)

मूल्य ७०/-
पृष्ठ ४८

देशप्रेम, त्याग, बलिदान एवं अन्य जीवन मूल्यों व प्रकृति–प्रेम पर आधारित १० रोचक बाल कथाएं।

बाल रश्मि

मूल्य १००/-
पृष्ठ ४८

सुप्रसिद्ध बाल रचनाकार **श्री गौरीशंकर वैश्य** 'विनम्र' की अनेक बाल भावों एवं कल्पना से रंगी २९ बाल कविताएं। इन कविताओं में बचपन के अनेक रंग आपको हर्षाएंगे गुदगुदाएंगे
प्रकाशन – निखिल पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, ३७ शिवराम कृपा, विष्णु कालोनी, शाहगंज, आगरा (उ.प्र.)

मेरे घर आओ गौरैया

मूल्य ५०/-
पृष्ठ ४०

विख्यात बाल कवि **डॉ. अशोक गुप्त 'अशोक'** की सरस लेखनी से निकली प्राकृतिक परिवेश से सजी १८ बाल कविताएं।
प्रकाशन – निखिल पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, ३७ शिवराम कृपा, विष्णु कालोनी, शाहगंज, आगरा (उ.प्र.)

पिली और टामी

मूल्य –/-
पृष्ठ ४०

बाल साहित्य की सशक्त हस्ताक्षर **डॉ. सविता बरुआ बोरा** द्वारा लिखित पूर्वोत्तरीय परिवेश में एक पालतू कुत्ते की संवेदना पूर्ण जीवन पर आधारित बाल उपन्यास
प्रकाशन – एस वाई एस प्रिन्टर्स, ज्योति नगर, गुवाहटी कालेज रोड़, गुवाहटी – २१

गौरैया ने घर बनाया

मूल्य १००/-
पृष्ठ ७६

ख्यात बाल गीत रचनाकार जयसिंह आशावत के तितली, अंगूर, हाथी, मेंढक, मोर, चंदा, रेल, टिटहरी, उल्लू आदि बालमन भावन विषयों पर २७ बाल गीत।
प्रकाशन – बोधि प्रकाशन, सी–४६, सुदर्शनपुरा, इण्डस्ट्रियल एरिया एक्स., नाला रोड़, २२ गोदाम, जयपुर ३०२००६ (राज.)

खुशी
चित्रकथा-
सेठजी..पकड़िए उसे..मुझे दिखा,वो आदमी आपकी जेब काटकर भागा है
हे भगवान..
अहा!..
बताने का धन्यवाद दोस्त.आओ,इसी खुशी में तुम्हें चाय पिलाई जाए..
उसने आपकी जेब काटी इसमेंभी खुशी की बात है?
हां,उसने मेरी दांईजेब काटी जिसमें केवल 5 रुपये थे जबकि मेरी बांई जेब में 5,000रुपये थे,जो बच गए हैं.

बड़े लोगों के हास्य प्रसंग

आचार्य विनोबाजी के पास एक बार एक नये कवि अपनी नवीनतम कविताओं को लेकर आए। थोड़ी बहुत औपचारिक बातें होने के बाद कवि महोदय ने विनोबा जी से पूछा, ''क्या आप कविताएं भी पढ़ते हैं?''

''अवश्य!'' विनोबा जी का उत्तर था। यह सुनकर उन्होंने फिर पूछा, ''कविताएँ आपको कैसी लगती हैं?''

''बहुत अच्छी! खास तौर से कविताओं के अगल-बगल में जो स्थान रिक्त रहता है, वह तो मुझे बहुत ही उदात्त और स्वच्छ लगता है।''

*****

विनोबा भावे जी से एक प्राध्यापक अपनी प्रशंसा करते हुए कहने लगे, ''अब तक मेरे हाथ के नीचे से हजार-बारह सौ विद्यार्थी निकल चुके हैं।''

विनोबा भावे, ''हजार बाहर सौ निकल चुके हैं यह तो ठीक है पर कोई हाथ भी आया?''

भारतीय महीने

कविता : तपेश भौमिक

वैशाख जेठ के दो महीने
छूटे सबके हैं पसीने।
आषाढ़ से भादौ, साथ सावन
बरसात के महीने मनभावन।
क्वांर-कार्तिक आए जब
दशहरा दिवाली आए तब।
अगहन में धान आए आँगन
नए अनाज को स्वागतम्।
पूस-माघ के अलग तराने
सैर-सपाटे के हैं बहाने।
फागुन-चैत्र को फाग गाते
कोयल पपीहरा गीत सुनाते।

• कूच बिहार (प. बंगाल)

धारा ३७० का अंत :

भारत के भव्यभाल से असमानता की काली छाया का तिरोधान

- जम्मू काश्मीर हमारे देश के सुन्दरतम प्रदेशों में से एक है।
- इसकी प्राकृतिक सुन्दरता अतुल्य है और सांस्कृतिक विरासत प्राचीन व समृद्ध।
- यह महर्षि कश्यप की पावन भूमि है।
- स्वतंत्र भारत में एक अदूरदर्शी और राजनैतिक महत्वाकांक्षा व अहंकार के फलस्वरूप इसे संविधान में ऐसी धारा से अभिशप्त कर दिया गया जिसे हम धारा ३७० कहते हैं। ३५ए भी इसी प्रकार का प्रावधान है।
- ३७० इसे शेष भारत के राज्यों की अपेक्षा एक ऐसे राज्य के रूप में उन प्रावधानों से जोड़ देने वाली धारा सिद्ध हुई जिसने दो विधान, दो निशान, दो प्रधान जैसी मांग को पोषित कर इसे 'विशेष' नहीं 'असामान्य' बना दिया।
- विशेष अधिकारों के नाम पर सर्वोच्च न्यायालय और केन्द्र सरकार के निर्णयों को जम्मू कश्मीर में सीधे लागू करना लगभग असंभव बन चुका था।
- इसमें बच्चों को अनिवार्य शिक्षा के कानून सहित स्वास्थ्य, संपत्ति का अधिकार जैसे कई महत्वपूर्ण कानून थे जिनसे इस राज्य के नागरिक वंचित रहते थे या शेष देशवासी।
- शेष भारत से इतनी प्रथकता निर्माण हो गयी कि जम्मू कश्मीर हमारे देश का अभिन्न अंग है कहते समय अंग के साथ 'अभिन्न' विशेषण जोड़ना आवश्यक-सा बन गया जो देश के अन्य राज्यों के साथ कभी कहने की आवश्यकता अनुभव नहीं हुई।
- १७ अक्टूबर १९४९ को राष्ट्रपति के आदेश जो जुड़ी धारा ३७० को देश की अखण्ड एकता और संप्रभुता के लिए खतरा मानकर संविधान निर्माण बाबा साहब अम्बेडकर जी और मौलाना अब्दुल कलाम आजाद जैसे नेताओं ने इसका प्रबल विरोध किया था पर पं. नेहरू और शेख अब्दुला की राजनैतिक हठ ने इसे भारत के भाल काश्मीर पर चिपका ही दिया।
- ७० वर्षों बाद ५ अगस्त २०१९ को भारत सरकार इस ऐतिहासिक भूल को सुधारते हुए इसे हटाने में सफल हुई जिसे हटाने को पं. श्यामाप्रसाद मुखर्जी जैसे राष्ट्रभक्तों को बलिदान होना पड़ा था।
- अब भारत की संसद के दोनों सदनों ने इसे भारी बहुमत से सदा के लिए समाप्त कर राष्ट्रपति जी द्वारा स्वीकृत करवा कर उन हजारों शहीदों सैनिकों को भी सम्मान दिया जिनको इस धारा की आड़ में पाकिस्तानी कुचक्रों, आतंकवाद, घुसपैठ और छद्मयुद्धों को विफल करने हेतु अपने प्राण दीप

बुझा देना पड़े।

- यह ऐतिहासिक पहल प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, गृहमंत्री श्री अमित शाह और महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविद द्वारा संभव हुई।
- इसके प्रमुख रणनीतिकारों में राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री अजीत डोभाल का योगदान अविस्मरणीय रहेगा।
- अब देश का कोई भी नागरिक जम्मू कश्मीर में घर, जमीन आदि खरीद सकता है। जो पहले संभव नहीं था।
- यहाँ भी देश के सारे कानून और सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय लागू होंगे जिनके अभाव में काश्मीरी नागरिक अनेक लाभों एवं विकास से वंचित रह जाते थे।
- अब वहाँ सीधे राज्य सरकार को भंग कर आवश्यक होने पर राष्ट्रपति शासन लागू हो सकेगा, पहले यहाँ राज्यपाल शासन ही संभव था।
- चूंकि यह राज्य अब पुनगठित स्वरूप में जम्मू कश्मीर और लद्दाख दो केन्द्रशासित प्रदेश के रूप में अस्तित्व ग्रहण कर चुके हैं यहाँ पुलिस व कानून व्यवस्था केन्द्र सरकार के अधीन रहेगी।
- यहाँ वित्तीय आपातकाल भी संभव हो सकेगा जो पहले असंभव था। विदेशों से आतंकवादियों को मिलने वाली आर्थिक सहायता रुकेगी।
- जम्मूकश्मीर की विधान सभा होगी जिसका कार्यकाल पहले छः वर्ष का होता था अब शेष भारतीय राज्यों की भाँति वह पांच वर्ष का होगा।
- लद्दाख, चण्डीगढ़ की भांति बिना विधानसभा वाला केन्द्र शासित प्रदेश होगा अब उसका समुचित विकास हो सकेगा क्योंकि जम्मू कश्मीर के साथ जुड़े होने से पहले यह लगभग उपेक्षा का शिकार रहा है।
- जम्मू कश्मीर में पहले केवल घाटी के नेता ही राज्य

सत्ता पर आरूढ़ रहते थे अब भारत का कोई भी नागरिक वहाँ चुनाव लड़ सकता है इस प्रकार वहाँ इसी अर्थ में पूर्ण लोकतंत्र स्थापित हुआ।

- सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि अपने जन्म सेही भारत से शत्रुभाव रख कर हरदम आक्रमण और घुसपैठ की ताक में रहने वाला पकिस्तान बार-बार काश्मीरियों को पथभ्रष्ट करने और कश्मीर को हड़पने का षड़यंत्र सोचता रहता है उसे अब ३७० की ढाल नहीं मिलेगी बल्कि उसके द्वारा हड़पा हुआ 'हमारा कश्मीर का हिस्सा' व चीन द्वारा हड़पा हुआ 'अक्साईचीन' पुनः प्राप्त करने में आसानी होगी।
- भारत की अखण्डता की दिशा में यह धारा समाप्त होना एक अभूतपूर्व ऐतिहासिक निर्णय है जो भारत के मस्तक से आतंक का कलंक मिटाकर नए अरुणोदय की केसर से उज्जवल कर देगा।

बिंदु मिलाओ- रंग भरो

• राजेश गुजर

नीचे बने चित्र को बिंदुओं से मिलाओ और एक क्रिकेटर खिलाड़ी को पहचानो और इनमें रंग भी भरो।

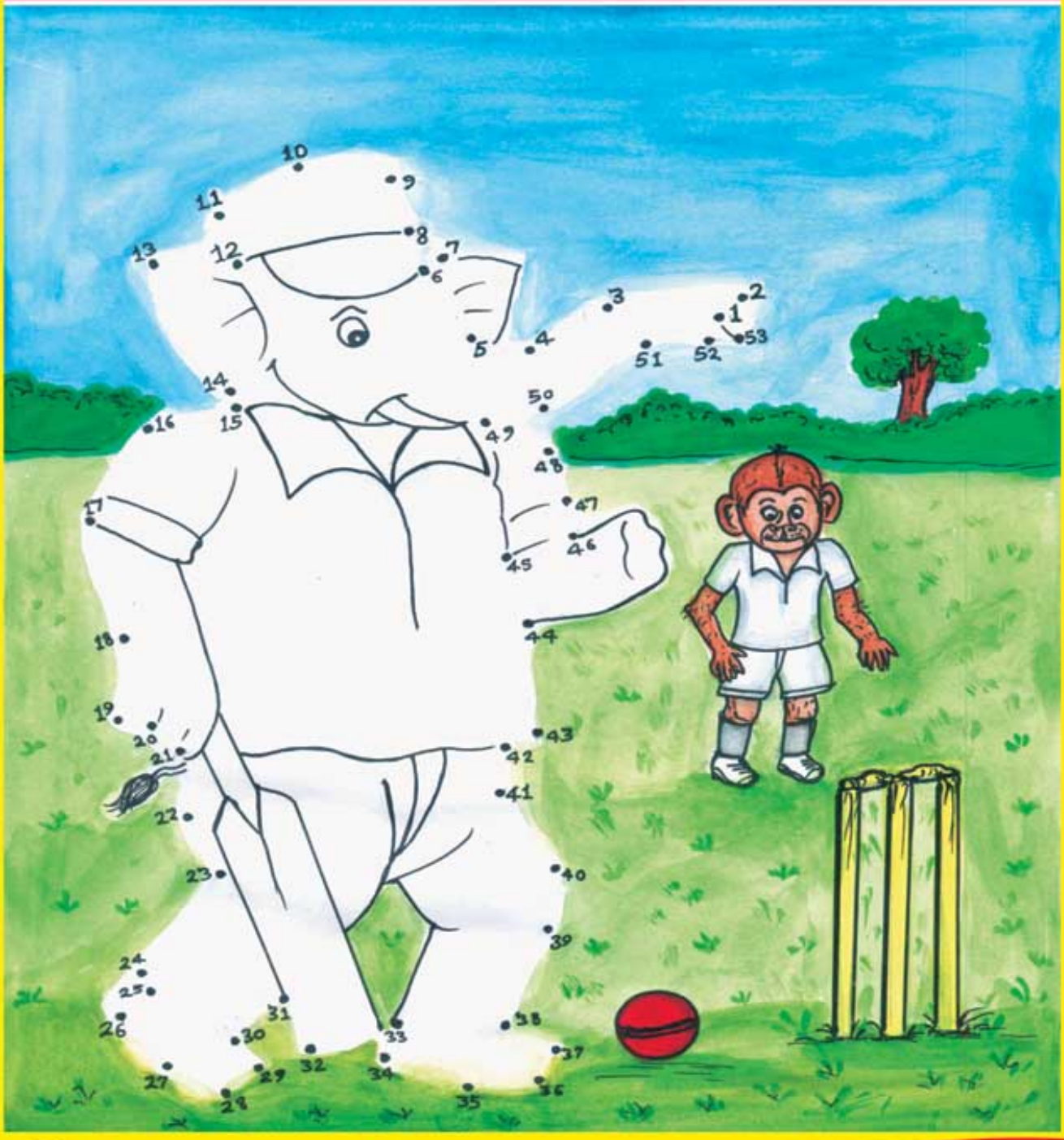

देवपुत्र परिवार-पत्र मेला

बच्चो! हम सबके जीवन में अपनेपन का भाव अपने परिवार से ही प्रारंभ करते हैं। यह वाट्सएप और ई-मेल का युग है ऐसा माना जाता है लेकिन आपकी पुरानी पीढ़ी अर्थात् अनेक के दादा-दादी, नाना-नानी इस नए प्रचलन से अनभिज्ञ हैं ऐसे परिवारजनों के लिए पत्र वर्षों पुराना माध्यम होकर भी उतना ही सशक्त है।

देवपुत्र आपके लिए एक विशिष्ट आयोजन कर रहा है वह है 'देवपुत्र परिवार-पत्र मेला'। इसमें सम्मिलित होने के लिए आपको पाँच पत्र लिखना होंगे।

एक- अपने दादा-दादी को

दो- अपनी माँ को

तीन - अपने आचार्य, दीदी/शिक्षक को

चार- किसी ऐसे व्यक्ति को जो आपके परिवार का सदस्य तो नहीं पर आपके परिवार से उसका संबंध इतना है कि उसे आप पारिवारिक रिश्तों का नाम देकर पुकारते हैं जैसे रिक्शे वाले भैया, फूल वाली अम्मा, सफाई वाली काकी, किराने वाले काका आदि।

पाँच - पाँचवा पत्र लिखिए अपनी भारत माता यानी देश के नाम, इस पत्र में आप देश के लिए क्या करना चाहते हैं अपना वह संकल्प और उसे पूरा करने की आपकी योजना का उल्लेख करें।

पत्र लिखते समय हम चाहते हैं कि आप अंकल/आंटी, सर/मेडम आदि के स्थान पर भारतीय सम्बोधन का उपयोग करें।

पत्र में आप अपने स्वाभाविक विचार लिखें न कि उसे सुने सुनाए, रटे रटाए आदर्श से ठसाठस भर दें। हाँ सहज रूप से आप किसी आदर्श या प्रेरणा से प्रभावित हैं तो उसका उल्लेख किया जाना चाहिए।

- पत्र सुवाच्य अक्षरों में हिन्दी भाषा में लिखा हों।
- यह पत्र लगभग ३०० से ५०० शब्दों में हो।
- प्रतियोगिता केवल अष्टमी से द्वादशी तक अध्ययनरत बच्चों के लिए है। अतः अपनी कक्षा का प्रमाण पत्र अपने प्राचार्य/प्रधानाचार्य से प्रमाणित कर अवश्य भेजिए।
- पत्र हमें ३१ दिसम्बर, २०१९ तक अवश्य प्राप्त हो जाएं।
- अपनी प्रविष्टि (पाँचों पत्रों की एक प्रविष्टि मानी जाएगी)के साथ प्रविष्टि पत्र पृथक से कागज पर स्वयं लिखकर भेजें।

प्रविष्टि भेजने का पता है - संयोजक देवपुत्र, परिवार-पत्र मेला
द्वारा/देवपुत्र, ४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

पत्र का प्रारूप होगा-

श्रीमान संयोजक महोदय,
देवपुत्र परिवार पत्र मेला
इन्दौर

महोदय मैं.....कक्षा .....देवपुत्र द्वारा आयोजित देवपुत्र परिवार पत्र मेला में सहभागी होना चाहता हूँ/चाहती हूँ। मेरी प्रविष्टि (पांचों पत्र) सम्मिलित करें। मेरा पता है -

नाम..... पिता.....

पता.....

पिन कोड ☐☐☐☐☐☐ दूरभाष ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐

हस्ताक्षर प्रतिभागी

प्रत्येक प्रकार के तीन-तीन सर्वश्रेष्ठ पत्र पुरस्कृत किए जाएंगे।

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०१८-२०२० | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०८/२०१९ | प्रेषण तिथि ३०/०८/२०१९ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

संस्कार संजोना अच्छी बात है संस्कार फैलाना और अच्छी बात है।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

विश्व का सर्वाधिक प्रसार संख्या कीर्तिमान

देवपुत्र

सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अवश्य देखें

www.devputra.com

एक अंक	२०/- रु.
वार्षिक सदस्यता	१८०/-रू.
त्रैवार्षिक सदस्यता	५००/-रू.
पंचवार्षिक सदस्यता	७५०/-रू.
आजीवन सदस्यता	१४००/-रू.
सामुहिक वार्षिक सदस्यता (कम से कम १० अंक लेने पर)	१३०/-रू. (प्रति सदस्य)

देवपुत्र अब Jio Net पर भी !

- संस्थाओं की आजीवन सदस्यता १० वर्ष रहेगी।
- सामूहिक सदस्यता वाले सारे अंक एक साथ भेजे जाते हैं।
- सदस्यता के लिए ड्राफ्ट/धनादेश 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' के नाम से बनवाइए।
- आनलाईन बैंकिंग से प्राप्त शुल्क की जमापर्ची की छायाप्रति (फोटोकॉपी) भेजना अनिवार्य है।

हमारा विश्वास है कि आपका स्नेह एवं सहयोग पूर्ववत् प्राप्त होता रहेगा।

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित

प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना